फरवरी 1981

मंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान



[illegible] सम्पर्क [illegible]

[illegible] लक्ष्मी प्रयुक्त [illegible]

एक महत्वपूर्ण घोषणा

अगला अंक

शिवांक

अपने ढंग का पहला, महत्वपूर्ण एवं संग्रहणीय अंक—जिसमें प्रकाशित होने वाले कुछ महत्वपूर्ण लेखों की बानगी –

रुद्राक्ष-महात्म्य एवं धारण विधि। द्वादश ज्योतिर्लिंग-स्थान, यात्रा, महात्म्य एवं फल। विभिन्न पदार्थों द्वारा निर्मित शिवलिंग व पूजा प्रकार। शिवपूजा की शास्त्रोक्त विधि। अमोघ सदाशिव कवच। अष्टमूर्ति शिवलिंग। शास्त्रों में वर्णित प्रसिद्ध शिवलिंग। नर्मदेश्वर। रोगमुक्ति व पूर्णायु प्राप्त करने के लिये महामृत्युञ्जय अनुष्ठान। संस्कृत साहित्य में शिव। भस्म विधि धारण प्रयोग। शिवरात्रि पूजा पद्धति। अखण्ड सौभाग्य हेतु हरतालिका व्रत विधान [illegible] महत्वपूर्ण लेखों से सुसज्जित।

एक ही अंक में इतनी विविध एवं महत्वपूर्ण सामग्री।

कहाँ क्या पढ़ें

[illegible]

[illegible] आप इसमें क्या परिवर्तन चाहते हैं, [illegible] [illegible] अपनी राय देना न भूलें, आपके विचारों का स्वागत है।

वर्ष : १

अंक : २

फरवरी, १९८१

सम्पादक :

कैलाश चन्द्र श्रीमाली

पत्र व्यवहार हेतु पता :

"मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान"

डॉ॰ श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी

जोधपुर – ३४२ ००१

(राजस्थान)

टेलीफोन : २२२०९

आ नो भद्रा : क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति उर्ध्वमुखी प्रगति और

भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसंधान केन्द्र से समन्वित मासिक

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ शतं जीव शरदो वर्द्धमानः
शतं हेमन्तान्छतमु वसन्तान् ।
शत मिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः
शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः ।

ऋग्वेद १०.१६१-४

हे प्रभु ! हम सौ वर्षों तक जीवित रहें, हमारी सन्तान बलिष्ठ होकर शतायु हो, हम अपने परिवार बन्धु-बांधव सहित दीर्घ आयु प्राप्त करें, हम शतायु होकर ईश्वर की आराधना में दत्तचित्त हों, तथा राष्ट्र निर्माण में पूर्ण सहयोग दें।

एक महत्वपूर्ण घोषणा

अगला अंक

शिवांक

अपने ढंग का पहला, महत्वपूर्ण एवं संग्रहणीय अंक—जिसमें प्रकाशित होने वाले कुछ महत्वपूर्ण लेखों की बानगी –

रुद्राक्ष-महात्म्य एवं धारण विधि। द्वादश ज्योतिर्लिंग-स्थान, यात्रा, महात्म्य एवं फल। विभिन्न पदार्थों द्वारा निर्मित शिवलिंग व पूजा प्रकार। शिवपूजा की शास्त्रोक्त विधि। अमोघ सदाशिव कवच। अष्टमूर्ति शिवलिंग। शास्त्रों में वर्णित प्रसिद्ध शिवलिंग। नर्मदेश्वर। रोगमुक्ति व पूर्णायु प्राप्त करने के लिये महामृत्युञ्जय अनुष्ठान। संस्कृत साहित्य में शिव। भस्म विधि धारण प्रयोग। शिवरात्रि पूजा पद्धति। अखण्ड सौभाग्य हेतु हरतालिका व्रत विधान व अन्य कई महत्वपूर्ण लेखों से सुसज्जित।

एक ही अंक में इतनी विविध एवं महत्वपूर्ण सामग्री।

कहाँ क्या पढ़ें :

यह अंक आपको कैसा लगा? आप इसमें क्या परिवर्तन चाहते हैं? कैसी सामग्री चाहते हैं? प्रत्येक अंक पढ़ कर अपनी राय देना न भूलें, आपके विचारों का स्वागत है।

वर्ष : १

अंक : २

फरवरी, १९८१

सम्पादक :

कैलाश चन्द्र श्रीमाली

पत्र व्यवहार हेतु पता :

"मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान"

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी

जोधपुर – ३४२ ००१

(राजस्थान)

टेलीफोन : २२२०६

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोमुखी उन्नति उर्ध्वमुखी प्रगति और भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसंधान केन्द्र से समन्वित मासिक

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ शतं जीव शरदो वर्द्धमानः
शतं हेमन्तान्छतमु वसन्तान् ।
शत मिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः
शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः ।

ऋग्वेद १०.१६१-४

हे प्रभु! हम सौ वर्षों तक जीवित रहें, हमारी सन्तान बलिष्ठ होकर शतायु हो, हम अपने परिवार बन्धु-बांधव सहित दीर्घ आयु प्राप्त करें, हम शतायु होकर ईश्वर की आराधना में दत्तचित्त हों, तथा राष्ट्र निर्माण में पूर्ण सहयोग दें।

सुना है कि . . .

महाराष्ट्र के स्वामी वसन्त परांजपे ने अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में अग्निहोत्र विश्वविद्यालय नामक एक नये विश्वविद्यालय की स्थापना की हैं, जिसके माध्यम से अमेरिकी किसानों को यह बताया जाता है कि यज्ञ के माध्यम से फसलों में लगने वाले कीटाणुओं का नाश किया जा सकता है, प्रसन्नता की बात यह है. कि अमेरिकी वैज्ञानिक यह मानने लगे हैं कि मंत्रोंच्चार एवं घी की आहुति से फसलों को चौगुना करने में सफलता मिलती है, तथा यज्ञ के धुँए से वे कीटाणु भी नष्ट हो जाते हैं जो कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से भी समाप्त नहीं होते ।

स्वामी पूर्णानन्द की हिमालय में विचरण करते समय पिछले दिनों महाभारत के प्रसिद्ध योद्धा कृपाचार्य से भेंट हुई थी, पत्रिका कार्यालय में उन्होने दावा किया है कि वे किसी भी तपोनिष्ठ व्यक्ति को कृपाचार्य से मिलवा सकते है। अन्य स्रोतों से भी स्वामी पूर्णानन्द जी के कथन की पुष्टि हुई है ।

पिछले दिनों हिमालय में बद्रीनाथ मंदिर से आगे लगभग तीन सौ ऋषियों,तपस्वियों एवं महर्षियों का सम्मेलन हुआ, जो लगभग दो दिन चला, सम्मेलन की समाप्ति पर जो निष्कर्ष स्पष्ट हुए, उसमें एक निष्कर्ष यह भी था कि कूर्मपृष्ठीय कनकधारा यंत्र के सामने मंत्र चैतन्य कमल गट्टे की माला से श्री मंत्र का जप किया जाए तो निश्चित रूप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होता हैं। श्री मंत्र जप से तात्पर्य नित्य कम से कम एक सौ आठ बार मंत्र उच्चारण से है।

गठिया रोग का इलाज सम्भव है और यह चुम्बकीय चिकित्सा मे है। वैद्य हरिनारायण शर्मा ने सफलता पूर्वक इसका प्रयोग कर सिद्ध किया है कि यह चिकित्सा गठिया रोगियों के लिये वरदान स्वरूप है।

'बोध संवहन विधि' द्वारा असंभव रोगों का इलाज भी संभव है, यह भारत की प्राचीनतम विधि है, तथा इसके द्वारा कई रोगियों के रोग दूर हुए हैं। भारत में स्वामी अवेलानन्द, महर्षि प्रज्ञा, डा. श्रीमाली इस विद्या के सिद्ध हस्त हैं।

इसमें रोगी को सामने आने की जरूरत नहीं होती, मात्र उसका फोटो पर्याप्त होता है। रात्रि को बारह बजे से तीन बजे के बीच फोटो पर प्रयोग कर रोग दूर करने का प्रयत्न किया जाता है।

डा. श्रीमाली की इस विधि ने चिकित्सा क्षेत्र में काफी संभावनाएं पैदा की हैं और उन्होंने बोध संवहन विधि द्वारा असंभव से असंभव रोगों का इलाज भी किया है, जिसमें वे पूर्णतः सफल रहे हैं। इस क्षेत्र में उच्च स्तर के चिकित्सकों ने भी प्रयोग और परीक्षण कर यह माना है कि यह विधि आश्चर्यजनक है।

डा. श्रीमाली ने बताया कि मैं रात्रि को ३ बजे से ५ बजे तक फोटो को सामने रखकर मन को एकाग्र कर अन्तर्मन से भावना देता हूं जिससे उस रोगी का रोग हमेशा के लिये समाप्त हो जाता है। इस कार्य के लिये डा. श्रीमाली किसी प्रकार की कोई धनराशि या दान स्वीकार नहीं करते, यह कार्य केवल मात्र परोपकार की दृष्टि से ही वे करते हैं।

डा. श्रीमाली ने बताया है कि पत्रिका के सदस्यों को, जो कि इस पत्रिका के ग्राहक हैं उन्हें इस विधि का लाभ देंगे। वे अपने या अपने सम्बधियों के रोग के बारे में विस्तार से लिखकर उनका फोटो साथ भेजें पर वह फोटो तीन महिनों से ज्यादा पुराना न हो। इसके साथ ही वे अपनी सदस्य संख्या भी सूचित करें।

शाश्वत स्वर

समय की चुनौती है और इस चुनौती को हमें स्वीकार करना है।

व्यक्ति की आन्तरिक उत्कृष्टता जब अभिव्यक्त होती है तब वह नया निर्माण करने में समर्थ हो पाता है जब वह चारों तरफ अन्याय अत्याचार संकीर्णता क्षुद्रता स्वार्थ और व्यक्तिगतता देखता है तो उसके मन में एक छटपटाहट सी होने लगती है, वह इन सारे बन्धनों को तोड़ ताड़ कर कुछ ऐसा कार्य करने के लिये उद्यत होता है जो नवीन होता है, त्यागमय होता है, परोपकार और समाजोपयोगी होता है।

आज ऐसा ही युग है चारों तरफ न्यूनता स्वार्थ और क्षुद्रता ताण्डव करती सी दिखाई देती है और भारतीय किंकर्तव्य विमूढ सा खड़ा खडा देख रहा है कि क्या यही मेरा देश है? क्या इन्हीं तत्वों के लिये मेरे पुरखों ने त्याग किया था? क्या इन्हीं और इसी प्रकार के कार्यों से यह देश भारत कहलाया था……और ये प्रश्न उसके मानस को कुरेदते हैं उसके मन में एक छटपटाहट सी भर देते है और वह समय को चुनौती देने के लिये कटिबद्ध सा खड़ा हो जाता हैं।

इस पत्रिका के माध्यम से हमने भी आज के युग को और समय को चुनौती दी है, हमने निश्चय किया है कि हम अब किंकर्तव्य विमूढ़ से खड़े खड़े ताकते नहीं रहेंगे इस पश्चिमवाद और नंगी सभ्यता के सामने सिर नहीं झुकायेंगे, अपितु नवीनता को अपनाते हुए अपने प्राचीन गौरव को स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे, अभी तक हम बाहर ही बाहर देखते रहे हैं, अब हम अपने मन में भी झांकने का प्रयत्न करेंगे, अपने आपको ऊर्ध्वमुखी बनायेंगे जीवन को निर्मल और विशुद्ध भारतीय बनायेंगे।

यह पत्रिका आपके इसी उद्देश्य की पूर्ति का दृढ संकल्प है आपने स्वयं यह अनुभव किया होगा कि इस पत्रिका को प्रकाशित करने के पीछे न तो कोई व्यक्तिगत स्वार्थ है और न कोई चाह ही, यह तो आप लोगों की इच्छाओं का मूर्तिमन्त रूप है, समय को चुनौती है।

पिछले कुछ दिनों में ही मैंने अनुभव किया है कि मेरा परिवार बहुत बड़ा है, आप सब पत्रिका के सदस्य मेरे परिवार के ही तो हैं, आपका सहयोग स्नेह ही तो मेरे साथ है समय को चुनौती देने में आप मेरे साथ हैं।

इस परिवार के सदस्यों में भी कुछ तो अत्यन्त घनिष्ठ है, जो कर्मठ नियमित और सुव्यवस्थित है जिन्होंने इस बात को अनुभव किया है कि यह पत्रिका हमारी है, उन्होंने विचारों से भावनाओं से और कार्यों से मुझे बल दिया है, अधिक से अधिक ग्राहक बनाने के लिये उन्होंने भूख प्यास नींद चैन की परवाह न करते हुए पत्रिका को हर संभव तरीके से सबल-सक्षम बनाने के लिये जो प्रयत्न किया है वह सराहनीय ही नहीं अनुकरणीय भी है। एक एक सदस्य ने पचास-पचास नये ग्राहक एक महीने की अवधि मे बनाय हैं क्या मैं उनके कार्यों को भूल सकता हूँ क्या उनके योगदान को विस्मरण किया जा सकता है? नहीं, कदापि नहीं।

दूसरे वे सदस्य हैं, जो इस पत्रिका के सदस्य तो है पर मात्र पूजा-उपासना में या अन्य परामर्शों के कारण मुझसे सम्पर्क बनाना या बढ़ाना चाहते है व्यक्तिगत जानकारी या चाह प्राप्त कर चुप बैठ जाते है, यों इनसे भी समय समय पर कई उपयोगी सुझाव प्राप्त हुए है।

मैं इन लोगों का आवाहन करता हूँ कि वे आगे बढ़कर मुझे सक्रिय सहयोग दें। मुझे न तो अमीर बनना है और न मुझे धन की लालसा है. न मैने यश की ही कामना की है और न पत्रिका के माध्यम से अपना कुछ हित

सम्पादन सोचा है·······यह परिश्रम इस लिये है कि इस अंधकार में कुछ रोशनी बिखेरनी है, आप लोगों से सहयोग की अपेक्षा इसलिये हैं कि पत्रिका के विचार ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँच सकें, पत्रिका के और ज्यादा पृष्ठ बढाये जा सकें, जिससे उसमें ज्यादा से ज्यादा गोपनीय और महत्वपूर्ण सामग्री आ सके···यह आपका और मेरा स्वार्थ नहीं है, अपितु समय की चुनौती है जिसे हमने स्वीकार की है और इस समय को मुंहतोड़ जवाब देना है, यह जवाब पत्रिका की पुष्टता से समव है, आपके सहयोग से संभव है।

मुझे तो प्रसन्नता है कि आप जैसा समृद्ध परिवार मुझे मिला है, आत्मोत्सर्गी सहायक मिले हैं, आवश्यकता है थोड़ी रुचि लेने की, यह समझने की कि दैनंदिन कार्यों में यह भी हमारा एक कार्य है, कार्य ही नहीं अपितु कर्तव्य है, व्यस्तता का बहाना बना कर हम अपने आपको ही धोखा दे सकते हैं, अपने व्यक्तिगत जंजालों को थोड़ा हल्का कर इस युग-कार्य के लिये भी समय बचा सकते हैं। आपके सम्पर्क सूत्र कमजोर नहीं है, आप कायर दब्बू या समाज से उपेक्षित पात्र नहीं हैं, अपितु आपकी भी समाज में हस्ती है, एक अस्तित्व है, एक प्रभाव है। आप प्रेरणा दे सकते हैं, पत्रिका को सुदृढ़ बनाने और नवीन विचारों को गतिशील बनाने हेतु दो तीन नये ग्राहक बना सकते हैं, यदि हमारे कुछ परिजन एक महीने में पचास से ज्यादा ग्राहक बना सकते हैं तो आपमें क्या कमी है? क्या न्यूनता है? कुछ भी तो नहीं, अपितु उनसे ज्यादा आपका प्रभाव है··· अपने प्रभाव का उपयोग तो करके देखिये····पेट-प्रजनन की प्रक्रिया तो हेय योनियों के कुचक्र में भी चलती रहती है आप तो इनसे बौद्धिक स्तर पर उन्नत हैं····समर्थ हैं···सक्षम हैं इस युग को परिवर्तन करने के पीछे जो सुखद संभावनाएं छिपी हुई हैं, उन्हें जीवन्त करने के लिये ही अपने परिजनों से अधिक प्रयत्नरत होने के लिये इतना आग्रह करना पड़ रहा है।

स्वामी हरिदास जी उस समय गृहस्थ थे—योग्य, सुशील, पत्नी, तेजस्वी मेधावी इक्कीस वर्ष का जवान पुत्र, पुत्र-वधू, भरा पूरा गृहस्थ।

पर हरीदास जी वीतराग। गृहस्थ में होते हुए भी गृहस्थ नहीं थे, यों वे गृहस्थ के सारे कर्त्तव्य बराबर निभाते।

अचानक एक दिन उनके जवान पुत्र का स्वर्गवास हो गया—वज्रपात! जिसने भी सुना सन्न रह गया, पूरा गांव शोक सागर में डूब गया।

हरीदास जी पुत्र की लाश के साथ श्मशान गये, हाथों से दाह संस्कार किया—उदास मन से घर लौटे।

शाम हुई। नित्य की भांति स्नान किया, सायं पूजा की, पत्नी से बोले—आज खाना नहीं पकेगा क्या?

पत्नी रो पड़ी—खाना—कौन खा सकेगा खाना?

बोले हरीदास—पगली! क्या वह तेरा था, अरे जिसका था, उसने वापिस ले लिया, फिर किस बात का दुख—किस बात का रुदन—

स्वामी हरीदास जी ने खाना खाया, नित्य की भांति जप किया, और नित्यवत् सो गये—ऐसा होता है निस्पृह जीवन।

विजय गणपति साधना : जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि

यों तो गणपति के हजारों रूप हैं, और प्रत्येक रूप अपने आप में अलग फलदायक है, अलग-अलग साधनाओं में अलग-अलग रूपों की कल्पना की गई है, पर "विजय गणपति" गृहस्थ व्यक्तियों के लिए तो श्रेष्ठतम वरदान है क्योंकि यह "भोग और मोक्ष" दोनों के ही प्रदाता हैं, जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता देने में समर्थ हैं।

मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त "विजय गणपति विग्रह" स्वयं ही सिद्धि दायक बन जाते हैं, फिर नित्य पूजा अर्चन जटिल विधि-विधान की आवश्यकता नहीं; जिस प्रकार अगरबत्ती जहां होगी, वहीं सुगन्ध देगी, अत: विजय गणपति विग्रह जहां स्थापित होंगे, वहीं ऋद्धि सिद्धि उन्नति सफलता देने में सहायक होंगे–चाहे घर का पूजाकक्ष हो, कारखाना हो फर्म या फैक्टरी हो....एक गोपनीय लेख..

कलियुग में गणपति शीघ्र सफलतादायक देवता माने गये हैं। जीवन में किसी भी शुभ कार्य को करने से पूर्व गणपति की पूजा आवश्यक मानी गई है। गणपति जीवन में पूर्ण समृद्धि और ऋद्धि-सिद्धि प्रदान करने वाले तथा जीवन को प्रत्येक दृष्टि से ऊंचा उठाने वाले देवता माने गये हैं। यद्यपि गणपति के कई रूप प्रचलित हैं और अलग-अलग साधनाओं में अलग-अलग रूपों का ध्यान और पूजा का प्रचलन है। परन्तु सभी साधकों ने एक स्वर से इस बात को स्वीकार किया है कि गृहस्थ जीवन के लिए विजय गणपति साधना सर्वश्रेष्ठ है। और यही एक मात्र साधना है जो गृहस्थ जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता देने में समर्थ है।

दक्षिण में विजय गणपति का भव्य मन्दिर है, महाराष्ट्र में प्रत्येक गृहस्थ अपने घर में विजय गणपति की स्थापना शुभ मानते हैं। बाली, जावा, सुमात्रा. द्वीपों में भी विजय गणपति के मन्दिर हैं। विजय गणपति के बारे में साधकों की ऊंची राय है। मैं कुछ साधकों के विचार नीचे दे रहा हूं।

जिसके घर में विजय गणपति की मूर्ति या विग्रह नहीं है, वह घर श्मशान के तुल्य है।

स्वामी बोधानन्द

सामान्य गृहस्थ जटिल साधनाएं नहीं कर सकते पर उनके घर में विजय गणपति तो स्थापित हो ही सकते हैं क्योंकि यही एक मात्र ऐसे गणपति हैं जो कि गृहस्थ जीवन को पूर्णता देने में समर्थ हैं।

सीताराम स्वामी

धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, उन्नति, स्वास्थ्य-सुख, वाहन, सन्तान, पत्नी-सुख, दीर्घायु, भाग्योदय, पति सुख, आर्थिक उन्नति, आदि सभी कुछ विजय गणपति में समाहित हैं फिर वह गृहस्थ दुर्भाग्यशाली ही कहा जायगा जिसके घर मे ऐसा विग्रह स्थापित नहीं होगा।

त्रिजटा अघोरी

'कलौ चण्डी विनायकौ' के अनुसार कलयुग में देवी और गणपति ही शीघ्र फलदायक हैं। गणपति में भी विजय गणपति तुरन्त और पूर्ण फलदायक देवता हैं। जिसके घर में विजय गणपति की स्थापना नहीं होती या पूजा नहीं होती,उसके घर में उन्नति कैसे सम्भव है ? वह व्यक्ति ठीक वैसा ही है जैसे कि गंगा के किनारे कोई प्यासा हो।

। योगत्रयी

वस्तुत: साधकों ने इस बात को अनुभव किया है कि विजय गणपति जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलतादायक हैं। गृहस्थ को चाहिए कि वे अपने पूजा स्थान में अन्य देवताओं के साथ-साथ विजय गणपति विग्रह की भी स्थापना करें।

विजय गणपति

साधक को श्रेष्ठ शुभ समय में गणपति की मूर्ति बनानी चाहिए या किसी योग्य कारीगर से इस प्रकार की मूर्ति का निर्माण कराना चाहिए। जब गणपति विग्रह तैयार हो जाय तो उसे पुष्य नक्षत्र में अभिषेक द्वारा साधना कक्ष में स्थापित करना चाहिए।

इसके बाद षोडशोपचार पूजा करके विशेष मंत्रों से संजीवन करना चाहिए और साथ ही साथ प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न करना चाहिए तभी वह मूर्ति या विग्रह चैतन्य और फलदायक होते हैं।

धातु निर्मित गणपति मूर्ति ही श्रेष्ठ मानी गई है, क्योंकि इस प्रकार का विग्रह कई पीढ़ियों तक सुरक्षित रहता है और इस प्रकार का विग्रह घर के पूजा स्थान में स्थापित होने से पूरा पूजा कक्ष ही चैतन्य हो जाता है।

जब गणपति विग्रह में प्राण प्रतिष्ठा हो जाय तब गणेश गायत्री मंत्र से उस पर अभिषेक करना चाहिए। इस अभिषेक में दूर्वा, जल और दूध का प्रयोग होता है तथा निरन्तर ग्यारह सौ गणेश गायत्री मंत्र से अभिषेक होता है।

गणेश गायत्री मंत्र निम्नलिखित है–

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।

जब अभिषेक सम्पन्न हो जाय तो उस पर सर्व सिद्धि गणपति मंत्र का जप एक लाख करना चाहिए। यह मंत्र निम्नलिखित है–

ऊं श्रीं ह्रीं क्लीं गणेश्वराय ब्रह्मस्वरूपाय चारवे
सर्व सिद्धि प्रदेशाय विघ्नेशाय नमो नमः।।

यह बत्तीस अक्षर का मंत्र सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाला तथा धर्म, अर्थ, काम, एव मोक्ष का फलदायक मत्र माना गया है। इस मत्र के एक लाख जप से वह गणपति विग्रह पूर्ण सिद्धिदायक हो जाता है।

इसके बाद इक्कीस हजार मंत्रों से गणपति को चैतन्य किया जाता है। यह मंत्र गणपति चैतन्य मंत्र कहलाता है

ऊं गं गौं गणपतये विघ्नविनाशिने स्वाहा

इस प्रकार जब वह विग्रह चैतन्य हो जाय तब अनन्त कालातीत साधना से उस विग्रह को चैतन्य किया जाता है। इससे वह विग्रह या मूर्ति अनन्त समय तक फलदायक बनी रहती है।

ऊपर मैंने विजय गणपति साधना से सम्बन्धित तथ्य स्पष्ट किये हैं। मैंने अपने जीवन में सैकड़ों साधनाएं की हैं और हजारों गृहस्थ लोगों को मंत्र-ज्ञान और साधनाएं सिखाई हैं जिससे कि वे जीवन में सभी दृष्टियों से उन्नति और पूर्णता प्राप्त कर सके हैं परन्तु मेरा यह अनुभव है कि विजय गणपति साधना अत्यन्त ही श्रेष्ठ, आवश्यक और तुरन्त फलदायक है। प्रत्येक गृहस्थ के घर में इस प्रकार का विग्रह स्थापित होना परम सौभाग्य का संकेत माना जाता है। वास्तव में वह गृहस्थ-घर धन्य है, जिसके घर में इस प्रकार का विग्रह स्थापित होता है। सम्बन्धित गृहस्थ अपने घर में मंत्र चैतन्य सिद्धि दायक धातु निर्मित, मत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त विजय गणपति विग्रह स्थापित कर इसका फल स्वय ही अनुभव कर सकता है।

कुण्डलिनी जागरण : जीवन का श्रेष्ठ वरदान

मानव जीवन की सार्थकता खाना-पीना सोना और सन्तान उत्पन्न करने में नहीं है, अपितु जीवन को ऊर्ध्वमुखी बनाकर उस परम सत्ता में अपने आपको लीन कर लेने में है।

जीवन को ऊर्ध्वमुखी बनाने में सर्वाधिक सहयोगी क्रिया 'कुण्डलिनी जागरण' है जो कि कठिन होते हुए भी अभ्यास के द्वारा सम्भव है।

इस लेख में कुण्डलिनी जागरण की सरल क्रियाओं को स्पष्ट किया है, जिसके माध्यम से साधक अपने लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं।

मनुष्य शरीर ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ वरदान है और जो अपने शरीर को भलीभांति समझ लेता है वह पूरे संसार को समझ लेता है। संसार में जितनी शक्तियां हैं वे सारी शक्तियां व्यष्टिरूप से मनुष्य में जीवनी शक्ति है, शास्त्रों में प्राण शक्ति को ही जीवनी शक्ति कहते हैं। और इन प्राण शक्तियों की केन्द्रीभूत शक्ति को कुण्डलिनी शक्ति कहा गया है। मनुष्य के शरीर की समस्त शक्ति, गति और क्रिया-शक्ति का आधार यही कुण्डलिनी शक्ति है। यह शक्ति एक स्थान पर कुण्डली बनाकर सांप के समान एकत्र हो कर रहती है इसीलिए इसे कुण्डलिनी शक्ति कहा गया है। मनुष्य आत्म कल्याण के लिए इस कुण्डलिनी शक्ति को सुषुम्णा नाड़ी के द्वारा ऊर्ध्व गति करके क्रम से षटचक्र भेदन करके सहस्रार में ले जाने के लिए प्रयत्नशील होता है। जब वह इस प्रकार करने में समर्थ-सफल हो जाता है, तब उसका दिव्य नेत्र खुल जाता है और इस दिव्य ज्ञान शक्ति के बल से वह अपने स्वरूप को देखकर कृतकृत्य हो जाता है, जन्म-मृत्यु के बंधन से हमेशा-हमेशा के लिए मुक्त हो जाता है।

कुण्डलिनी शक्ति का स्थान

मनुष्य शरीर के मेरुदण्ड के दोनों पार्श्व में इडा और पिंगला नाम दो नाड़ियां हैं, इन दोनों नाड़ियों के मध्य में एक अति सूक्ष्म एक और नाड़ी है, जिसे सुषुम्णा नाड़ी कहते हैं। इस नाड़ी के नीचे के भाग में चार दलों का त्रिकोणाकार एक कमल है, इस कमल पर कुण्डलिनी शक्ति सर्पाकार में कुण्डली बनाकर स्थित है–

पश्चिमाभिमुखी यो निगुदमेढान्तरालगा।
तत्रकन्दं समाख्यात तत्रास्ति कुण्डली सदा।।
सवेष्टा सकला नाडी सार्द्ध त्रिकुटिलाकृतिः।
मुखे निवेश्य सा पुच्छं सुषम्णा विवरे स्थिता।।

गुदा और लिंग के बीच में निम्नाभिमुख एक योनि मण्डल है जिसको कन्द स्थान कहा जाता है। इस कन्द स्थान में कुण्डलिनी शक्ति समस्त नाड़ियों को वेष्टित करती हुई साढ़े तीन आटे दे कर अपनी पूंछ मुख में लिये सुषुम्णा नाड़ी के छिद्र को अवरोध करती हुई, सर्प के सदृश अवस्थान करती है।

यह कुण्डलिनी शक्ति परमात्मा की शक्ति होती है, यह मयरहित तथा सोने के समान चमकने वाली है। हठ योग प्रदीपिका में कहा गया है कि–

कन्दोर्ध्वं कुण्डलीशक्तिः सुप्ता मोक्षाय योगिनाम्।
बन्धनाय च मूढानां यस्तां वेत्ति स योगवित्।।

अर्थात कन्द के ऊपरी भाग में कुण्डलिनी शक्ति शयन कर रही है, जो साधक या योगी इसको जगा देता है वह निश्चय ही मोक्ष प्राप्त करता है। जो कुण्डलिनी शक्ति को जगाने की युक्ति जानता है, वही वास्तव में योगी है।

कुण्डलिनी शक्ति जगाने का अभ्यास स्वयं ही नहीं करना चाहिये क्योंकि बिना गुरु के इस अभ्यास में कई प्रकार की समस्याएं आ जाती हैं। एक बार मेरा एक शिष्य मुझ से साधारण जानकारी ले कर अपने घर जा कर कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत करने का अभ्यास करने लगा, परन्तु उसका अभ्यास गलत दिशा की ओर मुड़ गया और उसके मुंह से खून गिरने लगा। तब वह बहुत ज्यादा घबरा कर मेरे पास आया और बड़ी कठिनाई से योग साधना के अभ्यास से पुनः उसका मुंह से खून बहना बन्द किया गया, तब पता चला कि अभ्यास में मूलाधार के बाद कुण्डलिनी गलत दिशा की ओर मुड़ गई थी, फलस्वरूप मुंह से रक्त प्रवाह प्रारम्भ हो गया था। गुरु यह भली भांति देखता रहता है कि शिष्य की कुण्डलिनी सही दिशा की ओर गतिशील है या नहीं, अतः कभी भी भूल कर भी बिना गुरु के इस प्रकार का अभ्यास नहीं करना चाहिये।

अब मैं कुण्डलिनी शक्ति के जागरण के लिए सामान्य अभ्यास बता रहा हूं जिसे प्रत्येक साधक को अपनाना चाहिये।

१. सबसे पहले साधक को नेती, धोती, वस्ति आदि क्रियाओं के द्वारा देह की शुद्धि कर लेनी चाहिये।

२. इस के बाद आठ प्रकार के प्राणायाम करने चाहिये, परन्तु जो साधक इन आठ प्रकार के प्राणायाम के अलावा अन्य प्राणायाम का अभ्यास करता है, तो वह उचित ही है।

३. इसके बाद गुरु से महा मुद्रा, महावेध, महाबन्ध, विपरीतकरणी, तारण, परिधान, युक्तिचालन, शक्तिचालनी आदि आवश्यक मुद्राएं सीखनी चाहिये। इस बात का ध्यान रखें कि ये सभी प्राणायाम तथा मुद्राएं बन्ध त्रय केसाथ ही करनी चाहिये।

४. इसके बाद राज योगविधि के अनुसार षट्चक्रों में भावनाएं देनी चाहिये।

प्रतिदिन का कार्यक्रम

१. साधक को नित्य पांच बजे उठ जाना चाहिये।

२. फिर भस्त्रिका प्राणायाम दोनों प्रकार का पांच से पच्चीस प्राणायाम तक करना चाहिये।

३. फिर शक्तिचालनी मुद्रा दोनों प्रकार की पांच से दस तक।

४. फिर ताड़नमुद्रा चार प्राणायाम से एक सौ एक प्राणायाम तक।

५. पारिधानयुक्तिचालन चार प्राणायाम से एक सौ एक प्राणायाम तक।

६. फिर षट्चक्रभेदन की मानसिक क्रियाएं करनी चाहिये।

प्रातः काल इतना कार्य प्रत्येक साधक को करना चाहिये। इसके बाद यदि प्रातः काल समय न हो तो शाम को निम्न कार्यक्रम का अभ्यास करना चाहिए।

१. महामुद्रा–प्रत्येक पैर पर ५ से २५ तक।

२. महाबन्ध–प्रत्येक पैर पर ५ से २५ तक।

३. महावेध–उभय प्रकार का ५ से १० तक।

४. विपरीतकरणी मुद्रा ५ से १० तक।

५. इसके बाद जो समय बचे उसमें षट्चक्रभेदन की क्रियाएं और इनका अभ्यास करना चाहिये।

इस प्रकार यदि साधक नियमित अभ्यास करता है, तो वह जल्दी सफलता प्राप्त करने में सफल हो पाता है। प्रारम्भ में साधक को जरूरत से ज्यादा पसीना आ सकता है, परन्तु बाद में यह पसीना आना बन्द हो जायगा और पूरे शरीर में बिजली जैसी चमक मालूम होगी। इसके बाद प्राण शक्ति के चलने का अनुभव होगा जैसे कि चींटी चल रही हो, इसके बाद मूलाधार चक्र का भेदन तथा

कुण्डलिनी शक्ति के ऊपर उठने का अनुभव होगा। ऐसी स्थिति आने पर साधक को नियमित रूप से गुरु के पास रह कर अनुभव करना चाहिये क्योंकि मूलाधार से आगे जब कुण्डलिनी शक्ति बढ़ने लगती है, तो कई बार वह मार्ग बदल देती है। फलस्वरूप रक्त प्रवाह आदि कई रोग होने की संभावना हो जाती है, परन्तु सद्गुरु के बताये हुए रास्ते पर चलने से किसी भी प्रकार की बाधा या रोग की संभावना नहीं रहती।

आगे चल कर साधना के बीच में कभी-कभी प्राण वायु सुषुम्णा में चढ़ जाने पर कमर, सीना तथा कण्ठ में बंधन जैसा अनुभव होने लगता है, परन्तु इससे साधक को घबराने की जरूरत नहीं है क्योंकि थोड़े दिनों के अभ्यास के बाद यह बन्धन स्वतः ही खुल जाता है।

षटचक्र

मेरुदण्ड के भीतर ब्रह्मनाड़ी में पिरोए हुए छः कमलों की कल्पना की गई है, इन्हीं को षटचक्र कहते हैं। प्रत्येक कमल के भिन्न दल हैं और प्रत्येक का रंग भी अलग-अलग है।

१. मूलाधार चक्र

इस चक्र की स्थिति रीढ़ की हड्डी के सबसे नीचे के भाग में 'कन्द' प्रदेश से लगे गुदा और लिंग के मध्य भाग में है। इस चक्र का जो कमल है, वह लाल रंग का है और उसमें चार दल हैं। इसे पृथ्वी तत्व का द्योतक माना गया है। यहीं पर साढ़े तीन आंटे लेकर सर्पाकार कुण्डलिनी अपनी पूंछ को मुंह में दबाए हुए सुप्तावस्था में रहती है।

२. स्वाधिष्ठान चक्र

इस चक्र की स्थिति लिंग स्थान के सामने है, इसका कमल सिन्दूर वर्ण वाला तथा छः दलों का है। यह जल तत्व का द्योतक माना जाता है और अर्द्धचन्द्राकार है।

३. मणिपूरक चक्र

यह चक्र नाभि प्रदेश के सामने मेरुदण्ड के भीतर स्थित है, इसका कमल नील वर्ण वाला तथा दस दलों का है। इस चक्र का यन्त्र त्रिकोण है तथा इसे अग्नि तत्व का द्योतक माना गया है

४. अनाहत चक्र

हृदय प्रदेश के सामने वाला यह चक्र लाल वर्ण के समान द्वादश दलों से युक्त है। इसे वायु तत्व का सूचक माना जाता है। जब कुण्डलिनी शक्ति इस चक्र को पार करती है, तो पूरे शरीर में एक विशेष चमक आ जाती है और सारी रीढ़ की हड्डी झनझनाने लगती है।

५. विशुद्ध चक्र

इस चक्र की स्थिति कण्ठ प्रदेश में है, इसका रंग धुएं के समान होता है तथा यह सोलह दलों का है। इसे आकाश तत्व का द्योतक माना जाता है।

६. आज्ञाचक्र

यह चक्र भ्रूमध्य के सामने मेरुदण्ड के भीतर ब्रह्म नाड़ी मे स्थित है, इसका कमल दो दलों वाला श्वेत रंग का होता है।

इन छः चक्रों के बाद मेरुदण्ड के ऊपरी सिरे पर सहस्र दल वाला चक्र है जिस पर शिव विराजमान हैं। जब इन परम शिव से कुण्डलिनी शक्ति का संयोग होता है, तब साधक को अखण्ड आनन्द की प्राप्ति और पूर्ण ध्यान प्राप्त हो जाता है।

कुण्डलिनी जागरण का अभ्यास योग्य गुरु के निर्देशन में ही सम्पन्न करना चाहिए, केवल पुस्तकों के आधार पर ऐसा अभ्यास करने पर कई बार जीवन की बाजी लग जाती है, और कच्चे साधक पागल के समान हो जाते हैं।

सहस्रार चक्र को 'दशम द्वार' या ब्रह्मरन्ध्र भी कहते हैं। मेरी जानकारी के अनुसार इसका स्थान कनपटियों से दो-दो इंच अन्दर और भृकुटि से लगभग तीन इंच अन्दर बड़े मस्तिष्क के भीतरी भाग के लगभग मध्य में तथा कण्ठ में स्थित 'काक' से दो अंगुल ऊपर तथा मस्तिष्क के 'महाविवर' नामक महाछिद्र के ऊपर छोटे से पोल में एक ज्योति पुंज के रूप में अवस्थित है।

सहस्रार में स्थिति लाभ प्राप्त करने पर साधक या योगी सभी अवस्थाओं में स्वच्छंद, सुखासीन तथा शोक एवं बन्धन से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार के योगी को 'अणिमादि' अष्टसिद्धियां, नव निद्धियां तथा समस्त प्रकार की विभूतियां प्राप्त होने लगती हैं। ऐसा योगी निश्चित ही त्रिकालदर्शी बन जाता है, उसका मोक्ष निश्चित है और वह हमेशा-हमेशा के लिए जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है।

वास्तव में ही वही मनुष्य धन्य है, जिसे सद्गुरु प्राप्त हो जाता है, वही भाग्यशाली कहलाता है जो कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया में रत होता है, और वही वास्तव में ब्रह्म स्वरूप माना जाता है जो कुण्डलिनी जागरण कर जीवन की पूर्णता प्राप्त कर लेता है।

※

ग्राम भाबुडा, तहसील जौरा, उत्तर प्रदेश।

हरी शंकर इसी गांव का रहने वाला था–सीधा साधा ग्रामीण, अपने तीन चार साथियों के साथ केदार नाथ की यात्रा पर निकला।

केदार नाथ दर्शन कर लौट रहा था तो मार्ग में दो साधु मिले, तेजस्वी, उन्नत ललाट, दे दीप्यवान मुख मडल।

बोले–तुम्हारा नाम हरिशंकर है?

हां, कहने पर उनमें से एक साधु बोला–तेरे गांव में किशनलाल ब्राह्मण का घर है, उसके बड़े बेटे माधव प्रसाद को तुम जानते हो?

हां! हां!! वह तो हमारे गांव के पंडित का लड़का है बाईस वर्ष का होशियार, मेधावी ब्राह्मण पुत्र!

तो यह कंकर उसे दे देना–और साधु ने एक कंकर उठा कर उस पर उंगली से ही कुछ लिख कर दे दिया।

हरी शंकर कंकर लेकर अपने गांव चला गया, दूसरे दिन उसने किशनलाल ब्राह्मण के घर जाकर उसके पुत्र माधव प्रसाद को वह कंकर देते हुए बोला–दो साधु थे, पता नहीं उन्हें तुम्हारा नाम पता कैसे मालूम था–मुझे यह कंकर दिया था, और कहते-कहते वह कंकर जेब से निकाल कर दे दिया।

माधव प्रसाद ने वह कंकर देखा, पढ़ा, बोला, गलती हो गई–हम तीन साधु थे, दो वे, और एक मैं। मुझे कुछ कारणों से यहां जन्म लेना पड़ा, पर मैं तो भूल ही गया, कि मेरा काम समाप्त हो गया है और मुझे वापिस जाना है।

उन्होने इस कंकर पर लिख कर याद दिलाया है कि कहां भटक रहे हो, माया जाल में? और कहते-कहते ब्राह्मण-पुत्र आंगन में लेट गया और दो क्षण में ही अपने प्राणों को अनन्त में विलीन कर दिया..।

वह कंकर आज भी म्यूजियम में सुरक्षित है। ※

जब मेरी कुंडलिनी जाग्रत हुई

आदिमकाल से लगाकर आज तक सारे धर्म शास्त्रों का निचोड़ यही रहा है कि मानव जीवन की सार्थकता केवल खाने-पीने सोने या सन्तान उत्पन्न करने से नहीं अपितु जीवन को ऊर्ध्वमुखी बनाकर कुण्डलिनी जागरण से है, भारतमें ही नहीं पूरे विश्व में मानव की छटपटाहट यही है कि उसकी कुण्डलिनी जाग्रत हो जाय, जिससे वह स्वयं को तथा ईश्वर को पूर्णता के साथ समझने में सक्षम हो सके।

प्रस्तुत लेख में उन्हीं व्यक्तियों के अनुभव है जो इस दिव्यता को पाने में सफल हो सके हैं....उन्हीं के शब्दों में....

मनुष्य शरीर अपने आप में प्रभु का श्रेष्ठतम वरदान है और जो व्यक्ति इस शरीर को भली प्रकार से समझ लेता है, उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

यह मानव जीवन केवल मात्र धन कमाने या संतान पैदा करने के लिये ही नहीं बना है, अपितु इसका मूल उद्देश्य यह है कि हम ऊर्ध्वमुखी बनें हमारा जीवन जिस अंश से बना है, उसी अंश में लीन हो जाए और हम अपने जीवन में ही उस ब्रह्म से साक्षात्कार कर लें जो कि मानव जीवन का परमलक्ष्य और ध्येय होता है।

आज अधिकांश व्यक्ति कुण्डलिनी के बारे में जानते है कि बिना योग्य गुरू के कुंडलिनी जागरण संभव नहीं। जिस मानव की कुंडलिनी जाग्रत हो जाती है, वह उस ब्रह्म के दर्शन तो करता ही है साथ ही साथ उसके शरीर पर एक विशेष चमक, उसके चेहरे पर एक विशेष आभा और उसके मन में एक विशेष प्रकार का निर्मल भाव आ जाता है। वास्तव में ही वे व्यक्ति धन्य हैं, जिनकी कुंडलिनी जागरण हो चुकी होती है।

हमारे शरीर में मूलतः सात चक्र माने गये हैं जिनमें १–मूलाधार, २–स्वाधिष्ठान, ३–मणिपूरक, ४–अनाहत, ५–विशुद्धचक्र, ६–आज्ञा, तथा ७–सहस्रार चक्र, प्रमुख हैं। मेरुदण्ड के नीचे कुंडलिनी सोई हुई अवस्था में रहती है और साधक विशेष प्रयत्न से इस कुंडलिनी को जाग्रत कर मनोवांछित फल प्राप्त करने में समर्थ हो पाते हैं।

कुंडलिनी जागरण दो प्रकार से संभव है प्रथम तो विशेष आसन प्राणायाम के द्वारा, तथा दूसरे योग्य गुरू के द्वारा शक्तिपात के माध्यम से। जबगुरु देखता है कि प्रयत्न करने पर भी शिष्य कुंडलिनी जागरण में सफल नहीं हो रहा है तब गुरु अपने प्रभाव तथा तपस्या के अंश से शिष्य की सोई हुई कुण्डलिनी को जाग्रत कर उसे समर्थ बना देता है और उस शिष्य को वे सभी अनुभव होने लगते हैं जो कि जाग्रत कुंडलिनी से सम्पन्न व्यक्तियों को होते हैं।

पाठकों और साधकों को अत्यन्त जिज्ञासा रहती है कि कुंडलिनी जाग्रत होते समय कैसे अनुभव होते हैं, मैं कुछ व्यक्तियों के अनुभव नीचे दे रहा हूं जिन्हे कुंडलिनी जागरण का अनुभव हुआ है और जिन्होंने इस आनन्द को प्राप्त किया है।

पूरे शरीर में विद्युत प्रवाह सा बना रहा..

पी०के० तारे–प्रवकाश प्राप्त न्यायाधीश

मेरे मन में बार बार यही विचार आता था कि मेरा जीवन व्यर्थ जा रहा है, और जब तक मैं किसी योग्य गुरू का आश्रय प्राप्त नहीं कर लूंगा तब तक न तो मुझे अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त हो सकेगा और न मैं अपने जीवन में उस अनिर्वचनीय बिन्दु के दर्शन कर सकूंगा जो कि बिरले लोगों को प्राप्त होता है।

सेवा से निवृत्त होने के बाद इस ओर मेरा रूझान बढ़ गया मेरा सम्पर्क काफी समय से योग साधक डा० श्रीमाली जी से था जब मैंने उनसे निवेदन किया तो उन्होंने मुझे विशेष आसन और प्राणायाम विधि समझाई, मैं अपने जीवन में ही अपनी कुंडलिनी जाग्रत कर लेना चाहता था और उन्होंने मुझे आश्वासन दिया था कि यदि मेरे बताए हुए रास्ते पर चलते रहोगे तो निश्च यही अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त कर लोगे।

इस बीच मैं हर दो महीनें के अन्तराल से जोधपुर जाता रहा और प्रत्येक बार आठ दस दिन तक वहां रहता, मैं जो कुछ अभ्यास कर रहा था, उन्हें बताता और आगे के लिये मार्गदर्शन प्राप्त कर लेता।

एक दिन जब मैं अपने घर के ड्राईंग रूम में बैठा हुआ प्रातःकाल का अखबार पढ़ रहा था, तो मेरी रीढ़ की हड्डी में सनसनाहट सी अनुभव हुई, और ऐसा लगा जैसे कोई जानवर अन्दर ही अन्दर रीढ़ की हड्डी में ऊपर चढ़ रहा है। मेरे लिए यह विचित्र अनुभव था, और उसी समय मेरा शरीर पसीने-पसीने हो गया ऐसा लगा जैसे मेरा शरीर पसीने से नहा गया हो मैंने अन्दर जाकर अपना कुर्ता खोल दिया परन्तु फिर भी स्वेद बह रहा था, मैं पलंग पर सो गया।

शाम को भी मुझे सनसनाहट अनुभव होती रही, परन्तु अब पसीना आना बन्द हो गया था, और शरीर के अन्दर विशेष गर्मी अनुभव हो रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे शरीर में कोई अग्निपुंज प्रकट हो गया हो और उसकी लपटें बाहर निकलने को आतुर हों। बार बार मेरा कण्ठ सूखता था और मैं बार-बार पानी पीने को बाध्य होता था।

रात भर मुझे नींद नहीं आई, मैं नहीं समझ रहा था कि यह क्या हो रहा है, मैंने अपने फेमिली डाक्टर से सम्पर्क स्थापित किया परन्तु वह भी किसी निर्णय पर नहीं पहुंच सका।

दूसरे दिन भी मेरा सारा शरीर झनझनाता रहा, मैं बार बार बेचैन हो रहा था और कुछ ऐसा अनुभव कर रहा था कि मेरे शरीर में से कुछ निकलने के लिये आतुर है। मैंने पत्नी को अपनी बात समझाई मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं अपनी पत्नी को ज्ञान दूं, और जितना जो कुछ ज्ञान मेरे अन्दर है, वह पत्नी में उंडेल दूं।

दिन भर मैं इसी प्रकार उत्तेजित रहा, मैं कुछ भी समझ नहीं पा रहा था, डाक्टर ने मुझे नींद की गोलियां लेने को कहा, मैंने उन गोलियों को लिया भी, परन्तु मुझे फिर भी नींद नहीं आई।

शाम को मैं जब बाहर लान में बैठा था तो अचानक मेरी आखें मुन्द गई और ध्यान लग गया। मैंने देखा कि मैं एक विचित्र लोक में उड़ रहा हूं, और उसका दृश्य अपने आप में अद्भुत तथा अनिर्वचनीय है।

जब मेरी आंख खुली तो ज्ञात हुआ कि इस समाधि में एक घंटा लग गया। पत्नी तो लगभग घबरा गई थी और मेरे पुत्र ने समझा कि शायद मैं बैठा बैठा बेहोश हो गया हूं। उसने डाक्टर बुला लिया था, परन्तु डाक्टर ने नाड़ी तथा हृदय की गति जांच कर कहा कि मैं स्वस्थ हूं और बेहोशी के कोई लक्षण नहीं है।

इससे मेरा पुत्र चिन्तित हो गया जब कि वास्तव में मैं बेहोश के समान बैठा हुआ था। जब एक घंटे बाद मेरी आखें खुली तब उनकी जान में जान आई। मैंने अनुभव किया कि मैं अत्यन्त हल्का हो गया हूं, मेरा शरीर फूल के समान कोमल और सुगन्धित सा हो गया है, मुझे अपने शरीर से सुगन्ध सी निकलती हुई अनुभव हुई। इसके बाद मेरा दिमाग लगभग शांत सा हो गया जो उत्तेजना और गर्मी मैं अनुभव कर रहा था, वह अब नहीं रही और मैं अपने पूरे शरीर में एक विचित्र प्रकार का आनन्द और प्रकाश सा अनुभव करने लगा।

पत्नी के अलावा मेरे अन्य परिचितों को भी ऐसा लगा कि मेरे चेहरे पर एक प्रकार की दीप्ति सी आ गई है, मेरी आंखों में एक विशेष प्रकार की करूणा झलक रही है, और मेरे शरीर से हलकी हलकी सुगन्ध निकल रही है।

मैं एक सप्ताह बाद ही जोधपुर अपने गुरू के पास पहुँच गया तब मुझे पहली बार गुरुमुख से ज्ञात हुआ कि मेरी कुण्डलिनी जाग्रत हो गई थी और उसी के फलस्वरूप ये अनुभव हो रहे थे।

मेरे सिर से प्रकाश उत्सर्जित होने लगा

अरविन्द कुमार–साधक

मेरे जीवन का वह दिन वास्तव में ही सौभाग्यशाली था जिस दिन मेरी कुण्डलिनी जाग्रत हुई, मैं वर्षों से अपने जीवन में यह आश संजोये हुए था कि किसी दिन मेरी इच्छा अवश्य ही पूर्ण होगी।

मेरा मूल ध्येय मंत्र और तंत्र में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करना था, और इस संबंध में अपने पूरे जीवन को लगा दिया था, मैंने इसके लिये प्रयत्न किये और यह मेरे गुरू की मेरे ऊपर विशेष कृपा रही कि उन्होंने मुझ अकिंचन को इतना अधिक दे दिया कि मैं आज भी अपने आपको सौभाग्यशाली समझता हूं।

तंत्र के क्षेत्र में जब मैं काफी कुछ बढ़ गया तो मुझे गुरू के द्वारा आदेश मिला कि मैं कुंडलिनी साधना प्रारम्भ करूं, इसके लिये अपने गुरू के निर्देशन में ही कार्य प्रारम्भ किया और नित्य छः घंटे तक इसका नियमित रूप से अभ्यास करने लगा।

इस प्रकार लगभग चालीस दिन बीत गये, एक रात्रि को मैं गुरू के घर से लगे हुए लोन में बैठा हुआ था, कि मेरी आखें अचानक मुन्द गई और मेरे मुंह से अनवरत गायत्री मंत्र का जाप होने लगा, जब कि मैं उस समय किसी अन्य मंत्रका जाप कर रहा था, वह मंत्र मैं भूल गया और पता नहीं कैसे मेरे मुंह से गायत्री मंत्र प्रारम्भ हो गया।

मुझे यह भी ध्यान नहीं रहा कि मैं कितने समय तक गायत्री मंत्र का जप करता रहा, परन्तु इतना मुझे अवश्य ध्यान रहा कि मैं अपने आप में हलका हो गया हूं। मुझे अन्दर ही अन्दर गुरू के क्रोध का डर लग रहा था और मैं उस मंत्र को याद करने की चेष्टा कर रहा था, जिसे पिछले एक सप्ताह से जप रहा था पर प्रयत्न करने पर भी मुझे वह मंत्र याद नहीं आ रहा था।

प्रातः पांच बजे के लगभग मेरी आंखें मुन्द गई, और मैं समाधि में चला गया। इससे पूर्व इस प्रकार से कभी भी समाधि नहीं लगी थी। मैंने इस बार समाधि में देखा कि मैं इस लोक से इतर अन्य लोकों में विचरण कर रहा हूं पर प्रयत्न करने पर भी मेरी आखें खुल नही पा रही है।

अचानक मैंने अनुभव किया कि मेरे सिर पर किसी का हाथ है, और वह हाथ धीरे धीरे मेरे सिर को सहला रहा है. उनके स्पर्श से मेरी आखें खुल गई, यद्यपि आंखें खोलने के लिये मुझे काफी परिश्रम करना पड़ा। आंखे खोलते ही मैंने देखा कि गुरू मेरे सामने खड़े है और काफी धूप निकल आई है, शायद मैं समाधि में तीन से ज्यादा घंटे रहा था।

आंखे खुलते ही पूरे शरीर में झनझनाहट सी अनुभव होने लगी और ऐसा लगा जैसे मेरी उंगलियां बिजली के नंगे तार को छू गई हो, सारा शरीर थर-थराने लगा, और मैं सप्रयास गुरु के चरणों में झुक गया।

तब मुझे अनुभव हुआ कि मेरी कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो गई है, और वह आज्ञाचक्र तक पहुंच गई है इसके बाद लगभग एक सप्ताह तक शरीर में झन-झनाहट भी होती रही, और दिन में किसी भी समय मेरी समाधि लग जाती, जबकि इससे पूर्व प्रयत्न करने पर भी समाधि नहीं लगती थी। मेरा शरीर हल्का हो गया था, पता ही नहीं चलता था कि मेरा शरीर है भी या नहीं, यही नहीं अपितु शायद मेरा शरीर हवा में उड़ता हुआ सा अनुभव हो रहा था।

एक सप्ताह में ही मेरा चेहरा भर गया था, चेहरे पर एक विशेष प्रकाश अनुभव कर रहा था, ऐसा भी अनुभव हो रहा था कि मेरे सिर के चारों ओर एक प्रभामंडल सा बन रहा है।

इसके बाद तो सहस्रार चक्र तक कुण्डलिनी को पहुंचाने में सक्षम हो सका था और बाद में मैंने कुण्डलिनी अमृतीकरण भी किया था जो कि अपने आप में अद्भुत है, अप्रतिम है और विलक्षण है।

मेरा रोम-रोम गुरु के चरणों में है कि उन्हीं की कृपा से यह सब कुछ प्राप्त हो सका है। मेरा स्वयं कुछ नहीं है, जो कुछ है गुरु का ही है, और उन्हीं की कृपा आशीर्वाद मेरे जीवन का संबल है। योगीराज गुरुदेव श्री श्रीमाली जी की एक ही शब्द में मेरी अभ्यर्थना है कि- 'त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्य मेव समर्पयेत्'।

उस स्थिति का वर्णन शब्दों से परे है

प्रियंवदा मौर्य-इन्दौर

मेरे जीवन की एक ही आकांक्षा थी कि मैं अपने जीवन को ऊर्ध्वमुखी बनाकर अपने चित्त को और प्राणों को उस ब्रह्म से मिला दूं जो कि समस्त संसार में व्याप्त है। मेरा अनुभव है कि खाना-पीना और संतान उत्पन्न कर देना कोई महत्वपूर्ण नहीं, क्योंकि यह कार्य तो पशु भी करते हैं मनुष्य और पशु में यही अन्तर है कि मानव इन स्थितियों से भी आगे बढने में सक्षम है।

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे प्रारम्भ से ही श्रीमाली जैसे योग्य गुरु मिले। मैंने और मेरे पति ने उनसे दीक्षा ली, और दीक्षा के बाद ही उन्होंने हम दोनों को कुण्डलिनी जागरण की विधि समझाई।

मैं एडवोकेट हूं और मेरा अधिकांश समय न्यायालय में बीतता है। परन्तु मैंने यह अनुभव किया कि यह कार्य बहुत अधिक थकाने वाला और समस्याओं को पैदा करने वाला है। जब मैं अपने कार्य से और घर गृहस्थी की समस्याओं से थक जाती तो मेरा मन गुरु चरणों में पहुंचने को आतुर-व्याकुल हो जाता और मैं कुछ समय का अवकाश लेकर गुरु चरणों में पहुंच जाती।

एक दिन मैं अपने अध्ययन कक्ष में बैठी एक केस से संबंधित फाइल देख रही थी कि मेरे सारे शरीर में एक विचित्र सी उत्तेजना और झनझनाहट सी अनुभव हुई और ऐसा लगा जैसे मेरा पैर बिजली के नंगे तार से छू गया हो।

मैं उठकर पलंग पर लेट गई, मेरा सारा शरीर पसीने पसीने हो रहा था, दिल जोरों से धड़क रहा था ऐसा लग रहा था जैसे यह उछल कर बाहर निकल पड़ेगा। मेरे पेट में जोरों का दर्द उठा, मैं समझ नहीं पा रही थी कि यह क्या हो रहा है? मैंने टेलीफोन कर अपने फेमिली डाक्टर श्री पी.एस. वशिष्ठ को बुलाया तब तक मेरे पुत्र ने कालेज में टेलीफोन कर मेरे पति को भी बुला लिया था।

डा. ने पूरी तरह से मुझे जांचा, रक्तचाप लिया परन्तु कुछ भी अव्यवस्थित नही था। डाक्टर को भी समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या है? मेरे पेट में दर्द ज्यादा से ज्यादा बढ़ रहा था और इतना अधिक दर्द हो रहा था कि मैं उसे बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी। यह दर्द ठीक वैसा ही हो रहा था जैसा कि प्रसव काल में होता है।

कुछ समय के लिये मैं संज्ञा शून्य सी हो गई, मेरे पति ने बाद में बताया कि मेरे मुंह से वेद की ऋचाएं तथा गीता के श्लोक आदि निकल रहे थे।

ऐसी स्थिति लगभग चार पांच घंटे रही, मेरी आंखों के सामने से अंधकार हटने लगा जैसे मैं प्रकाश से नहा गई हूं। बाहर के साथ ही साथ मेरे अन्दर भी प्रकाश पुंज फूट पड़ा था, और मुझे कई ऐसे दृश्य दिखाई देने लगे थे जो कि मैंने इससे पहले नहीं देखे थे।

शाम तक सब कुछ सामान्य हो गया, यही नहीं अपितु मेरा मन एक विचित्र आलोक, एक विचित्र प्रसन्नता एक विचित्र आह्लाद से भर गया था। उसके बाद मेरी समाधि स्वतः ही लगने लगी। काम में मेरा मन ज्यादा लगने लगा, पहले की अपेक्षा मैं बहुत ज्यादा सुन्दर ढंग से करने लगी।

वास्तव में ही मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझती हूं कि मैंने अपने जीवन में इस अनिवर्चनीय आनन्द को प्राप्त किया है और तब से बराबर इस आनन्द से सराबोर हूं।

मेरे पति तो कई बार मुझसे मजाक में कहते हैं कि तुम मुझसे इस क्षेत्र में आगे बढ़ गई हो। यह गुरूजी की कृपा और उनका आशीर्वाद ही है कि मैं इस जीवन में कुछ प्राप्त कर सकी हूं जो कि सामान्य मानव प्राप्त नहीं कर पाते।

कुण्डलिनी जागरण मेरे जीवन की सर्वोच्च निधि है।

स्वामी चेतन्य-दिल्ली

मैं इस बात को जानता था कि जब तक मानव की कुण्डलिनी जागरण नहीं होती तब तक उसके सारे प्रयास व्यर्थ है। मैं बहुत भटका, परन्तु मुझे कोई भी योग्य गुरु प्राप्त नहीं हुआ जिसके मन में करुणा हो, और जो अपने शिष्यों से गौरवान्वित हो। जब चारों तरफ से हताश-निराश होकर थक गया तब मैंने अन्तिम प्रयास के रूप में पूज्य गुरुवर श्रीमाली जी के चरणों में पहुंचा।

मैंने सोचा था कि जाते ही श्रीमाली जी मुझे शिष्य मान लेंगे और अपने चरणों में बिठा कर कुण्डलिनी जागरण की शिक्षा देंगे, परन्तु महीने भर के प्रयास के बाद भी उन्हें गुरु रूप में न पुकार सका, यह मुझ में ही कमी थी, मेरी आंखों के सामने गंगा प्रवहित थी पर मैं ही उसमें स्नान नहीं कर पा रहा था।

आखिर उन्हें मुझ पर दया आ गई और उन्होंने मुझे अपने घर पर ही टिका दिया। मेरा लक्ष्य इतना ही था कि उनके द्वारा मैं दीक्षा प्राप्त करूं और उनके द्वारा ही मेरी कुण्डलिनी जाग्रत हो। इसके लिये मैं कई साधुओं और योगियों के आश्रमों में रहा, सभी ने मुझे आश्वासन दिया, परन्तु किसी ने भी कुण्डलिनी जागरण की क्रिया नहीं सिखाई। मुझे कहते हुए कोई संकोच नहीं है कि वे स्वयं अपूर्ण थे, हो सकता है उनकी कुण्डलिनी जाग्रत हो परन्तु दूसरों की कुण्डलिनी जाग्रत करने की क्रिया न तो उन्हें ज्ञात थी और न उनमें शक्तिपात करने की क्षमता ही ही थी।

जब गुरु देख लेता है कि शिष्य अपने प्रयत्नों से या साधना से कुण्डलिनी जागरण करने में सक्षम नहीं हो पा रहा है तो गुरु अपनी साधना और तपस्या का बल शिष्य को देकर उसकी कुण्डलिनी जाग्रत कर लेते हैं, पर यह वही गुरु कर सकता है जिसके पास साधना और तपस्या का बल हो, भण्डार हो।

मैं श्रीमाली जी के यहां लगभग चार वर्ष रहा। इन वर्षों में मैंने उनका दुर्वासा रूप भी देखा है और कोमल हृदय भी। प्रारंभ से ही उन्होंने मुझे कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया समझा दी थी और मुझे अभ्यास कार्य बता दिया था।

मैं बराबर प्रयत्न करता रहा परन्तु मुझे सफलता नहीं मिल पा रही थी। मेरे सामने उनके शिष्य आते और मैं देखता, कि वे साधना क्षेत्र में ऊंचे उठ रहे हैं पर मैं जहां का तहां बना रहा।

मेरे बाद में जो शिष्य बने उनका पूर्णाभिषेक और राज्याभिषेक मेरे सामने हुआ, और मैं जड़वत् वहीं का वहीं बना रहा। मेरी आंखों के सामने कई शिष्यों की कुण्डलिनी जागरण का दृश्य बना, परन्तु प्रयत्न करने पर भी मैं सफल नहीं हो पा रहा था। मेरी स्थिति को गुरुजी देख रहे थे, उनके सिखाने में कोई कसर नहीं थी या यों कहूं कि वे दूसरों की अपेक्षा मुझ पर ज्यादा ही स्नेह और करुणा की वर्षा करते थे, परन्तु यह मेरा ही दुर्भाग्य था कि मैं प्रयत्न करने पर भी सफल नहीं हो पा रहा था।

उस दिन तो मेरी आंखों में आंसू आ गये जब मुझसे काफी बाद रमेश भाई गुरूजी के घर में शिष्य के रूप में आकर रहे और कुछ महीनों बाद उनकी कुण्डलिनी जाग्रत हो गई और उनका पूर्णाभिषेक हुआ। यह दृश्य सुखदायक होने पर भी मेरे लिये ग्लानियुक्त था। मैंने निश्चय कर लिया कि मेरे दुर्भाग्य के दरवाजे इतने अधिक मजबूती से बंद हैं कि गुरुजी जैसे समर्थ व्यक्ति के धक्के या प्रहार से भी

खुल नहीं पा रहे है। मैंने उसी रात आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया , यदि इस जीवन में कुण्डलिनी जागरण ही नहीं कर सका तो फिर मुझे जीवित रहने का अधिकार ही क्या है ?

मुझे ज्ञात नहीं था कि गुरूजी मेरे विचारों को पढ़ रहे हैं जब रमेश भाई का कार्य सम्पन्न हो गया तो उन्होंने मुझे अलग कमरे में बुलाया और कहा चैतन्य ! आत्म हत्या तो जीवन का सबसे जघन्य पाप है। मुझे दुःख है कि तुम मेरे शिष्य हो और फिर भी इतने कायर और गयेबीते हो कि इस प्रकार का विचार तुम्हारे मन में आया। मैं आज ही तुम्हारी कुण्डलिनी जाग्रत करना चाहता था परन्तु अब मैं एक महीने बाद ही ऐसा करूंगा। तुम्हें इस एक महीने में एक समय भोजन करके प्रायश्चित्त करना है और अन्तिम सात दिन सर्वथा मौन रहना है ।

मैंने बिना नू नच किये उनकी आज्ञा स्वीकार कर ली और उनके बताये हुए तरीके से ही प्रायश्चित किया।

एक दिन दोपहर को अचानक गुरूजी ने मुझे बुलाया और अपने सामने बैठने को कहा। मैं घबरा गया कि मुझसे क्या अपराध हो गया है जिससे मुझे सामने बैठना पड़ा है। उन्होंने मुझे अपने पास सरकाया और पीठ पर से कपड़ा हटा कर धीरे धीरे रीढ़ की हड्डी पर हाथ फेरने लगे ।

कुछ ही क्षणों बाद रीढ़ की हडडी में सनसनाहट सी हुई और सारे शरीर में उत्तेजना की लहर दौड़ गई। मुझे ऐसा लगा कि जैसे मैं तेल के खोलते हुए कड़ाह में फेंक दिया गया हूँ। किस समय मेरी समाधि लग गई, मुझे कुछ ज्ञात नहीं, पर जब मेरी आंख खुली तो शाम के सात बज गये थे। इसका तात्पर्य यह हुआ कि मैं लगभग नौ घंटे तक समाधि में रहा हूँ ।

इससे पहले प्रयत्न करने पर भी मेरी समाधि नहीं लगती थी मैं समाधि खुलने पर अपने कमरे में चला गया परन्तु मेरा सारा शरीर तवे की तरह जल रहा था, आंखों से चिनगारियां सी निकल रही थी और प्यास के मारे मेरा गला सूख रहा था।

आधी रात के लगभग मुझे शान्ति सी मिली, मैंने देखा कि मेरी आंखों के सामने एक ज्योति बिन्दु चमक रहा है जो कि धीरे धीरे नील वर्ण से सफेद होता जा रहा है। मैं टकटकी बांध कर उस बिन्दु को देखता रहा और देखते देखते प्रातःकाल हो गया।

मेरी आंखों से नींद उड़ गई थी, पूरा शरीर अजीब आनन्द और मस्ती से भर गया था। न मुझे भूख लग रही थी और न प्यास ही। मेरे मुंह से विचित्र सी ध्वनियां निकल रही थी कई बार मैं ऐसे मंत्र बोल रहा था जिन्हें इसके पूर्व न तो सुना था और न पढ़ा ही था। मैं बाहर लान में पड़ा रहता। मैं चाहता था कि कोई भी मुझे न छेड़े। बीच बीच में स्वतः ही पद्मासन लग जाता और साथ ही साथ मेरी समाधि भी लग जाती

एक सप्ताह तक लगभग ऐसी ही स्थिति रही, इस सप्ताह में न तो गुरूजी ने मुझे बुलाया और न माताजी ने ही भोजन के लिये इसरार किया। एक सप्ताह बाद मैं पूरी तरह से संयत हो गया था मैं किसी को भी देखता तो उसके आगे का जीवन स्वतः ही दिखाई देने लगता। मेरे मन में एक अजीब आनन्द भर गया था। एक सप्ताह बाद माताजी से मुझे ज्ञात हुआ कि उस दिन गुरुजी ने शक्तिपात द्वारा ही मेरी कुण्डलिनी जाग्रत की थी।

आज मैं जो कुछ हूँ उसका पूरा पूरा श्रेय गुरूजी को ही है। वे वास्तव में ही करूणा की साक्षात मूर्ति हैं जिन्होंने मुझ जैसे पत्थर को भी मनुष्य बना लिया।

इसके बाद तो मेरा पूर्णाभिषेक और राज्याभिषेक भी हुआ, मैं आज भी सर्वात्मभाव से गुरूचरणों में रत हूँ। यद्यपि मैं शरीर से गुरू चरणों से दूर हूं पर एक क्षण के लिये भी मेरी आंखों से वे चरण ओझल नहीं हो पाते।

वास्तव में ही मानव जीवन तभी धन्य है, जबकि वह अपने जीवन में कुण्डलिनी जागरण निधि प्राप्त कर ले। ऐसा होने पर ही उसके आगे का पूरा जीवन उठ जाता हैं और वह आगे बढ़कर ब्रह्म से साक्षात्कार करने की क्षमता प्राप्त कर पाता है।

कुण्डलिनी जागरण से जो आनन्द और मस्ती प्राप्त होती है या बाद में जो मस्ती बनी रहती है, उसे प्रयत्न करने पर भी कागजों पर उतारना संभव नहीं है। इसका अनुभव तो वही कर सकता है जिसके भाग्य में ऐसा संभव हो।

हरिद्वार का कुंभ। चारों तरफ विशाल जन समूह। टेंटों तम्बुओं, कनातों का विशाल नगर। जहां तक दृष्टि जाती, तम्बू ही तम्बू नजर आते। अचानक कुंभ में आग लग गई, और उसने कपड़े से बने टेंटों को अपनी विकराल लपटों में घेर लिया। चारों तरफ हाहाकार, क्रन्दन सा मच गया, पर ईश्वर भक्त सदगृहस्थ रामसुख जी के टेंट में आग का लवलेश तक नही था।

कुछ समय पहले ही इस टेंट में एक साधु आये थे, बोले मुझे आग ही आग नजर आ रही है, मैं तो यहीं बैठा हूं मुझे कुछ खाने को दे।

रामसुखजी की बहू ने उठ कर स्टोव पर कड़ाही रखी। पूरियां निकलती गई, और स्वामीजी खाते रहे। चारों तरफ आग का भीषण तांडव, पर स्वामीजी शान्त, स्थिर, अविचलित।

रामसुखजी ने कहा भी, स्वामीजी ! चारों तरफ आग ही आग हैं; इस टेंट को भी यह आग थोड़ी देर में लील जायगी, चले, भाग-चलें।

पर स्वामीजी चुप। आश्चर्य की बात यह, कि आसपास के सारे टेंट जल कर स्वाह हो गये पर वह टेंट सर्वथा अछूता बचा रहा, शाम को छः बजे तक स्वामीजी एक आसनपर बैठ कर कुछ न कुछ खाते रहे और शंकित मन रामसुख का परिवार उन्हे खिलाता रहा।

सात बजे जब वे उठे, तो चारों तरफ मरघट की सी शांति थी, बाबा उठकर एक तरफ चले गये, न बोले, न कुछ कहा……अचानक उस स्थान पर जहां स्वामी जी बैठे थे, रामसुख जी का पैर पड़ गया……और पैर पड़ते ही उस पर फफोले हो आये……

सारी आग को तो स्वामी जी अपने आसन के नीचे दबाये बैठे थे, हजारों लाखों दर्शक इस घटना के साक्षी हैं।

दुर्लभ प्राप्य सामग्री

सम्पूर्ण देश से ऐसे सैकड़ों पत्र प्राप्त होते रहे हैं जो अपने घर में, पूजास्थान में, दुकान में या प्रतिष्ठान में महत्वपूर्ण सामग्री या यंत्र स्थापित करना चाहते हैं, पर वे दुविधाग्रस्त रहते हैं, कि प्राप्य सामग्री प्रामाणिक है भी या नहीं।

साधकों एवं पाठकों की इस भावना को ध्यान में रख कर पत्रिका-कार्यालय या केन्द्र में ऐसी ही व्यवस्था रक्खी है कि यहां से जो भी सामग्री दी जाय, वह प्रामाणिक हो, पूर्ण विधि विधान युक्त हो।

यह कार्य निःस्वार्थ भावना पर आधारित है, पत्रिका कार्यालय इस प्रकार से लाभ लेना अनुचित समझता है। मंत्र साधना पूजा आदि में जो व्यय होता है, उसी को ध्यान में रखकर बिना हानि लाभ के सामग्री प्रस्तुत करने में पत्रिका-कार्यालय कृत संकल्प है।

समय समय पर इस प्रकार की दुर्लभ प्रामाणिक सामग्री से परिचय कराया जायगा, इस प्रकार की दुर्लभ सामग्री कम होती है, व्यापारिक स्तर पर तो इनका निर्माण होता नहीं है, अतः जो पाठक-साधक प्राप्त करना चाहें, वे यथा संभव शीघ्र ही सम्पर्क स्थापित कर सामग्री प्राप्त कर लें, अन्यथा न होने की स्थिति में भेज पाने के लिये विवशता का सामना करना पड़ेगा।

कमल गट्टे की माला

यह मंत्र चैतन्य, मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त है तथा लक्ष्मी से सम्बन्धित साधना के लिये इस प्रकार की माला ही लाभदायक एवं त्वरित फलदायक मानी गई है।

मूल्य ३०)०० रुपये

कनकधारा यंत्र

लक्ष्मी प्राप्ति, व्यापार वृद्धि, पूर्ण भौतिक सुख-सौभाग्य प्राप्त करने में यह सर्वश्रेष्ठ यंत्र माना गया है। धातु निर्मित होने के कारण कई पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सकता है। कूर्मपृष्ठीय होने से भोग एवं मोक्ष देने में सहायक है तथा प्रत्येक गृहस्थ के पूजाघर में, व्यापारिक स्थल, कार्यालय या दुकान में स्थापित करने योग्य—मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त देदीप्यवान यंत्रराज—कनकधारा यंत्र.......

मूल्य २४०)००

विजय गणपति

एक दुर्लभ तथा आवश्यक विग्रह, जीवन में समस्त प्रकार की उन्नति, तथा घर में मंगलमय वातावरण के लिये प्रत्येक गृहस्थ के पूजा कक्ष में स्थापित होने लायक आवश्यक एवं अनिवार्य विग्रह। जीवन में निरन्तर विजय प्रदान करने व विघ्न बाधाओं को दूर करने में सहायक, भव्य एवं आकर्षक धातु निर्मित मूर्ति, मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त......पूर्ण प्रभावयुक्त।

मूल्य १८६)०० रुपये

पंचांगुली यंत्र : पंचांगुली देवी चित्र

भविष्य दर्शन एवं अक्षरशः भविष्य को जानने के लिये पंचांगुली साधना श्रेष्ठतम साधना है, इस साधना में मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त "पंचांगुली यंत्र चित्र" तथा "पंचांगुली देवी चित्र" अनिवार्य है। साधना के अलावा यदि इनके सामने मात्र पंचांगुली मंत्र जप ही किया जाय तब भी अनुकूलता प्राप्त होती है।

मूल्य ७५)०० रुपये

बगला मुखी यंत्र

जीवन में पग पग-पर बाधाओं, कष्टों और परेशानियों से बचने, शत्रुओं का मान-मर्दन करने, उन्हें परास्त करने मुकदमे में सफलता प्राप्त करने व शरीर की रक्षा के लिये अद्भुत आश्चर्यजनक यंत्र—शरीर पर धारण होने से भूत-प्रेत-पिशाच व तांत्रिक क्रियाओं का प्रभाव नहीं होता, घर में स्थापित होने से भूत-प्रेत का प्रकोप नहीं होता, प्रत्येक गृहस्थ के लिये आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी;.......

मूल्य सामान्य ६००)०० रुपये
विशिष्ट १५००)०० रुपये

मंगलाचरण टेप....

जिसके घर में प्रातः वेदध्वनि होती है, वह घर पवित्र वातावरण से दिन भर महकता रहता है, यजुर्वेद के प्रामाणिक मंत्र सस्वर "मंगलाचरण टेप" टेप रिकार्डर से प्रातःकाल बजाने व घर के सदस्यों एवं बालकों में अच्छे संस्कार डालने में सहायक....

मूल्य ६०)०० रुपये

श्री यंत्र

सम्पूर्ण विश्व में श्री यंत्र की चर्चा है, सभी प्रकार की उन्नति व आर्थिक लाभ के लिये घर के पूजा स्थान, दुकान, कार्यालय या फेक्ट्री में रखने योग्य, मंत्र सिद्ध धातु निर्मित प्राणप्रतिष्ठा युक्त।

मूल्य १७७)०० रुपये

श्वेतार्क गणपति

आक की जड़ से शुभ एवं श्रेष्ठ मुहूर्त में ऋद्धि सिद्धि युक्त श्वेतार्क गणपति विग्रह-अष्ट लक्ष्मी सम्पुट, मंत्र संजीवनी प्राणप्रतिष्ठा युक्त, भव्य विग्रह।

मूल्य ६००)०० रुपये

हत्था जोड़ी

जीवन में अभय प्राप्त करने, समस्त प्रकार के उपद्रवों से बच निकलने एवं रक्षा करने में समर्थ सिद्ध हत्था जोड़ी दुर्लभ एवं संग्रहणीय।

मूल्य ५१०)००

सियारसिंगी

शरीर पर किसी प्रकार का तांत्रिक प्रभाव न हो, तथा किसी को भी वश में करने में पूर्ण समर्थ, पति को अनुकूल बनाने, प्रेमी या प्रेमिका को मनोनुकूल, तथा घर में पूर्ण सुख शांति के लिए आश्चर्यजनक संग्रहणीय-सियार सिंगी।

मूल्य-५१०)०० रुपये

गौरी यंत्र

शीघ्र विवाह होने, मनोनुकूल पति या पत्नी प्राप्त होने तथा विवाह बाधा योग शान्त करने में समर्थ सक्षम यंत्र-गौरी यंत्र-चांदी से निर्मित मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त।

मूल्य ६००)०० रुपये

बजरंग यन्त्र

घर में भूत प्रेतादि का उपद्रव शांत करने, परस्पर कलह मिटाने एवं आनन्ददायक घर-गृहस्थ बनाये रखने में समर्थ, आश्चर्यजनक यंत्र।

मूल्य ५१०)०० रुपये

सरस्वती यंत्र

स्मरण शक्ति बढ़ाने, परीक्षा में उत्तीर्ण एवं श्रेष्ठ सफलता प्राप्त करने के लिए सरस्वती यंत्र।

मूल्य ३००)०० रुपये

धनराशि अग्रिम मनिआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से निम्न पते पर भेजें।

सचिव
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग : हाईकोर्ट कोलोनी
जोधपुर (३४२००१) राजस्थान

पंचांगुली : भविष्य दर्शन की श्रेष्ठतम साधना

साधना, और उसमें सफलता प्राप्त करना अब कुछ साधुओं या योगियों की बपौती नहीं रही. अपितु कोई भी व्यक्ति सही जानकारी प्राप्त कर साधना से घर बैठे सफलता प्राप्त कर सकता है।

पंचांगुली साधना" ऐसी ही एक दिव्य, सरल और सुगम साधन है, जो प्रत्येक साधक सफलता पूर्वक सम्पन्न कर सकता है। आवश्यकता है मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त पंचांगुली देवी चित्र की....

वस्तुत: यह साधना भविष्य ज्ञान हेतु श्रेष्ठ साधनाओं में से एक है....प्रस्तुत लेख में साधना बिन्दुओं को सफलता से स्पष्ट किया है....

पंचांगुली साधना भारतीय जीवन की श्रेष्ठतम साधना है, क्योंकि इसके माध्यम से भविष्य दर्शन पूर्ण रूपसे स्पष्ट हो जाता है। यद्यपि भविष्य को ज्ञात करने का साधन ज्योतिष है और ज्योतिष, हस्तरेखा विज्ञान आदि के माध्यम से व्यक्ति के भविष्य को स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है परन्तु प्राचीन समय से भारत वर्ष में यह प्रचलित है कि "बिना इष्ट के सब कुछ भ्रष्ट है"। इसका तात्पर्य यह है कि कोई भी ज्योतिषी तब तक पूर्ण रूप से भविष्यक्ता तथा यशस्वी नहीं बन सकता जब तक कि उसके पास कोई सिद्धि या साधना न हो।

यद्यपि भविष्य को जानने के लिये कुछ सिद्धियां प्रचलित हैं परन्तु वे सब कठिन और तुरन्त फलदायक नहीं है, इसकी अपेक्षा पंचांगुली साधना सरल होने के साथ तुरन्त और अचूक फलदायक है, साथ ही साथ इस साधना को कोई भी व्यक्ति सिद्ध कर सकता है।

जैसा कि पत्रिका के अंकों में कर्ण पिशाचिनी के बारे में बताया जा चुका है कि उस साधना से किसी भी व्यक्ति के भूत काल को स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है. ठीक इसी प्रकार पंचांगुली साधना से किसी भी व्यक्ति के भविष्य के प्रत्येक क्षण को अक्षरश: पहिचाना जा सकता है।

मैं जीवन में पूरे भारत में घूमा हूं और मैं सैकड़ों हजारों तांत्रिकों और साधकों के सम्पर्क में आया हूं। मैंने यह अनुभव किया है कि वही व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता, यश और सम्मान प्राप्त कर सकता है जिसने जीवन में पंचांगुली साधना सम्पन्न कर ली हो।

महाराष्ट्र में गोकुल भाई का नाम भविष्यदृष्टा के रूप में विख्यात है। मैं उनसे सामान्य रूप से ही मिला था और जब मैंने अपने भविष्य को जानने की इच्छा प्रकट की तो उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर कहा कि कल दोपहर तीन बजे की गाड़ी से तुम्हें दिल्ली जाना पडेगा परन्तु यह यात्रा तुम्हें मार्ग में ही अधूरी छोड़नी पड़ेगी।

वास्तव में ही दूसरे दिन बिना कार्यक्रम के भी मुझे यात्रा करनी पड़ी थी, और मार्ग में यात्रा अधूरी छोड़कर मुझे वापस लौट आना पड़ा था।

राजस्थान में सीकर जिले में मीठालाल जी प्रसिद्ध ज्योतिषी हैं और उन्हें सही रूप में देखा जाय तो ज्योतिष

का नहीं के बराबर ज्ञान है, परन्तु वे जो कुछ भविष्य वाणी करते हैं वह अक्षरश: सत्य उतरती है और दूर दूर से लोग उनसे भविष्यफल जानने के लिये आते हैं।

वे एक भविष्यवाणी के सौ रुपये लेते हैं और फिर भी वहां भीड़ बनी रहती है। मुझे याद है मैं किसी कार्यवश जीप से उनके गांव के पास से निकल रहा था, मेरे साथ सेठ गोवर्द्धनदास जी थे। उत्सुकतावश हम पण्डितजी के पास पहुँचे, बातचीत से ज्ञात हुआ कि उन्हें ज्योतिष का ज्ञान मामूली सा ही है। सेठजी ने सौ रु० देकर जानना चाहा कि शाम तक मेरे साथ क्या घटना घटित होगी, तो पण्डितजी ने बताया कि शाम को लगभग छः बजे तुम्हें पीठ में बिच्छू काटेगा।

हम हंस दिये और जीप लेकर आगे बढ़ गये, परन्तु शाम को अपने गन्तव्य पर पहुँच कर सेठजी होटल में रुक गये और अपना कुर्ता उतार कर खूंटी पर टांग दिया। परन्तु किसी कार्यवश उन्हें छः बजे जाने के लिये तैयार होना पड़ा और कुर्ता पहिनते ही उनको पीठ पर बिच्छू ने काट खाया, जब कुर्ता खूंटी पर टंगा हुआ था तभी कोई बिच्छू उस कुर्ते में घुस गया होगा।

कुल मिला कर मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि इतनी सूक्ष्म भविष्यवाणी जब की जाती है तो सामान्य व्यक्ति उसे ईश्वर का ही अंश मान लेते हैं और उनसे मिलने के लिये लम्बी कतारें लग जाती हैं।

उपरोक्त दोनों उदाहरणों में उन्हें पंचांगुली साधना सिद्ध थी। वास्तव में ही वर्तमान समय में यह साधना आश्चर्यजनक फलदायक तथा सिद्धिदायक हैं। इसे किसी भी वर्ण का व्यक्ति सिद्ध कर सकता है, और अपने जीवन में यश, मान, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। मैंने देखा है कि नौकरी में वे व्यक्ति ज्यादा लोकप्रिय हो जाते हैं तथा उन्नति कर लेते है जो इस प्रकार की भविष्यवाणी करने में समर्थ होते हैं, वे अधिकारियों के भी अत्यन्त प्रियपात्र बने रहते हैं, इसी प्रकार व्यापारी इस प्रकार की साधना से सम्पन्न होकर यह ज्ञात कर लेता है कि आने वाला समय कैसा है? क्या भाव होंगे, तथा जिनसे व्यापार-विनिमय हो रहा है वह धोखा तो नहीं दे देगा, इस प्रकार यह साधना जीवन में सभी दृष्टियों से अनुकूल रहती हैं।

पाठकों की जानकारी के लिये इस साधना से संबंधित तथ्य स्पष्ट किये जा रहे हैं :

पंचांगुली–साधना

यह साधना किसी भी समय से प्रारम्भ की जा सकती है, परन्तु साधक को चाहिए कि वह पूर्ण विधि विधान के साथ इस साधना को सम्पन्न करे। मंत्र-जप तीर्थ भूमि, गंगा यमुना संगम, नदी- तीर, पर्वत गुफा, या किसी मन्दिर में की जा सकती है। साधक चाहे तो साधना के लिये घर का एकान्त कमरे का उपयोग भी कर सकता है।

पंचांगुला–यंत्र

इस साधना में यंत्र आवश्यक है। शुभ दिन शुद्ध समय में साधना स्थान को स्वच्छ पानी से धो ले। कच्चा आंगन हो तो गोबर से लीप ले। तत्पश्चात् लकड़ी के एक समचोरस पट्टे पर श्वेत वस्त्र धोकर बिछा दे और उस पर चावलों से यंत्र का निर्माण करे। चावलों को अलग अलग पांच रंगों में रंग दे, यंत्र को सुघड़ता से सही रूप में बनावे। यंत्र की बनावट में जरा सी भी गलती सारे परिश्रम को व्यर्थ कर देती हैं।

तत्पश्चात् यंत्र के मध्य में ताम्र-कलश स्थापित करे, और उस पर लाल वस्त्र आच्छादित कर ऊपर नारियल रखे और फिर उस पर पंचांगुली देवी की मूर्ति स्थापित करे, इसके बाद पूर्ण षोडसोपचार से नौ दिन तक पूजन करे और नित्य पंचांगुली मंत्र का जप करे।

यह सही है कि आधुनिक समय में प्रत्येक स्थान पर प्रामाणिक विद्वान प्राप्त नहीं होते, जो कि यंत्र का स्वरूप और विधि समझा सके, परन्तु साधना में प्रामाणिक पंचांगुली यंत्र तथा पंचांगुली देवी चित्र आवश्यक है।

सर्व प्रथम मुख शोधन कर पंचांगुली मंत्र चैतन्य करे। पंचांगुली की साधना में मंत्र चैतन्य 'ईं' है अतः मंत्र के प्रारम्भ और अंत में 'ईं' सम्पुट देने से मंत्र-चैतन्य हो जाता है।

मंत्र चैतन्य के बाद योनि मुद्रा का अनुष्ठान किया जाय, यदि योनि-मुद्रा अनुष्ठान का ज्ञान न हो तो भूतलिपि-विधान करना चाहिए ।

इसके बाद यंत्र पूजा करके पंचांगुली ध्यान करे ।

पंचांगुली-ध्यान

पंचांगुली महादेवी श्री सीमन्धर शासने ।
अधिष्ठात्री करस्यासौ शक्तिः श्री त्रिदशेशितुः ।।

पंचांगुली देवी के सामने यह ध्यान करके पंचांगुली मंत्र का जप करना चाहिए–

पंचांगुली-मंत्र

ओम नमो पंचांगुली पंचांगुली परशरी माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौसठ काम विहंडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीपानमध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोटिंगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनी-मध्ये यक्षिणीमध्ये दोषणीमध्ये गुणिमध्ये गारुड़ीमध्ये विनारिमध्ये दोषमध्ये दोषशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपर बुरो जो कोई करे करावे जड़े जड़ावे चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्री माता पंचांगुली देवी तणो वज्र निर्धार पड़े ओम् ठं ठं ठं स्वाहा ।

वस्तुतः यह साधना लम्बी और श्रम साध्य है । प्रारम्भ में गणपति पूजन, संकल्प, न्यास, यंत्र-पूजा, प्रथम वरण पूजा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ सप्तम, अष्टम और नवमावरण के बाद भूतोपसंहार करके यंत्र से प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए ।

इसके बाद पंचांगुली देवी को संजीवनी बनाने के लिए ध्यान, अन्तर्मातृका न्यास, कर न्यास, बहिर्मातृका न्यास करनी चाहिए । यद्यपि इस सारी विधि को लिखा जाय तो लगभग चालीस-पचास पृष्ठों में आयेगी, यहां मेरा उद्देश्य पाठकों को मात्र इस साधना से परिचित कराना है ।

देश के श्रेष्ठ साधकों का मत है कि यदि साधक ये सारे क्रियाकलाप न करके केवल घर में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त पंचांगुली यन्त्र तथा संजीवनी सम्पुट युक्त मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त पंचांगुली देवी चित्र स्थापित कर उसके सामने नित्य पंचांगुली मंत्र २१ बार जप करे तो कुछ समय बाद स्वतः ही पंचांगुली साधना सिद्ध हो जाती है ।

यह सुविधाजनक है, और इसमें किसी प्रकार की त्रुटि सम्भव नहीं होती । पाठकों के आग्रह बराबर केन्द्र को प्राप्त होते रहे हैं, अतः इस प्रकार पूर्ण विधि विधान से सिद्ध कराकर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त पंचांगुली यन्त्र तथा संजीवनी सम्पुट युक्त मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त पंचांगुली देवी चित्र केन्द्र से भेजने की व्यवस्था की जा सकती है ।

वस्ततः यह साधना सरल है, क्योंकि इसमें किसी प्रकार की जटिलता का सामना नहीं करना पड़ता । लेखक का स्वयं यह अनुभव रहा है और उसने अपने शिष्यों से इस प्रकार की साधनाएं सम्पन्न करवाई है और वे इस साधना में सफल हुए हैं ।

सामान्य साधक को लम्बे चौड़े जटिल विधि विधान में न पड़कर अपने घर में पंचांगुली देवी चित्र की स्थापना कर लेनी चाहिए, और नित्य प्रातः स्नान कर पंचांगुली मंत्र का २१ बार उच्चारण करना चाहिए ।

कुछ समय बाद मंत्र सिद्ध हो जाता है और यह साधना सम्पन्न होकर वह सफल भविष्यद्रष्टा बन जाता है । साधक में जितनी उज्जवलता और पवित्रता होती है, उसी के अनुसार उसे फल मिलता है ।

वस्तुतः वर्तमान युग में यह साधना श्रेष्ठतम और प्रभावपूर्ण मानी जाती है तथा प्रत्येक मंत्र-मर्मज्ञ और तांत्रिक-साधक इस बात को स्वीकार करते हैं कि वर्तमान समय में यह साधना अचूक फलदायक है ।

आरोग्य

दमा-

मेरा जीवन अधिकतर यायावर रहा है और जीवन का अधिकांश भाग साधु सन्तों के साथ बीता है । कुछ साधुओं के पास आयुर्वेद का आश्चर्यजनक खजाना है जो कि अपने आप में प्रामाणिक होने के साथ साथ शत प्रतिशत सफलता देने में भी सहायक है ।

ऐसे ही एक बार सीताराम स्वामी से भेंट के दौरान कुछ उपयोगी जड़ी बूटियों के बारे में लेखक को ज्ञान प्राप्त हुआ था, उन्होंने दमा रोग के बारे में अद्भुत औषधि बताई थी जो कि सर्वथा गोपनीय है और आसान होने के साथ साथ पूर्ण रूप से प्रभाव युक्त है ।

मेरे जीवन में कुछ भी गोपनीय नहीं रहा और न मैं इस प्रकार की औषधियों से धन संचय करना चाहता हूँ । सीताराम स्वामी से जो गोपनीय नुस्खा प्राप्त हुआ था वह इस पत्रिका के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाना अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

एक नारियल ले लें जो कि हरा हो और जिसमें पानी हो । ऐसे नारियल समुद्र के किनारे बहुत अधिक बिकते हैं, ऐसे ही एक नारियल को लेकर उसमें छोटा सा छेद बना देना चाहिए, फिर दो तोला कुल्हड़ का असली हींग लेकर उस छेद से नारियल के अन्दर डाल देनी चाहिए, इस प्रकार वह हींग नारियल के अन्दर पानी में मिल जायगी, फिर नारियल का छेद भीगे हुए गेहूं के आटे से बन्द कर देना चाहिए जिससे कि हवा उसके अन्दर न जावे ।

फिर इस नारियल को फ्रिज में रख देना चाहिए और सात दिन तक फ्रिज में ही रक्खे रहना चाहिए, आठवें दिन नारियल को बाहर निकाल कर छेद को खोल देना चाहिए और उस पानी को किसी कटोरी में निकाल कर छान कर शीशी में भर लेना चाहिए ।

बाकी नारियल फेंक देना चाहिए । उस पानी को नित्य एक चम्मच दमे के रोगी को पीना चाहिए, पर इस बात का ध्यान रहे कि यह दवा लेने के एक घण्टे पहले और एक घण्टे बाद अन्य किसी वस्तु का प्रयोग नहीं करना चाहिए ।

जहां तक मेरा अनुभव है इससे असाध्य से असाध्य दमा भी ठीक हो जाता है, परन्तु इसमें हींग पूर्णतः असली और कुल्हड़ की होनी चाहिए, अन्यथा नुकसान हो सकता है ।

ज्ञानामृत

(याद करिये, बातचीत में उपयोग करिये, बड़े अक्षरों में लिख कर घर में टांगिये)

धैर्यं यस्य पिता, क्षमा च जननी, शान्तिश्चिरं गेहिनी ।
सत्यं सूनुरयं, दया च भगिनी, भ्राता मनः संयम ।।
शय्या भूमितलं दिशोऽपि वसनं ज्ञानामृतं भोजनः ।
मेते यस्य कुटुम्बिनो वद सखे कस्माद् भयं योगिनः ।।

जिसका पिता धैर्य हो, मां क्षमा हो, पत्नी के रूप में शांति हो, सत्य जिसका साथी हो, दया जिसकी बहिन हो, मन का संयम ही जिसका भाई हो, पूरी पृथ्वी जिसकी शय्या हो, दशों दिशाएं जिसके पहिनने को वस्त्र हों तथा ज्ञानरूपी अमृत ही जिसका भोजन हो । जिसके ऐसा समृद्ध कुटुम्ब हो, उस योगी को इस पृथ्वी पर क्या भय हो सकता है ?

स्तब्धस्य नश्यति यशो विषमस्य मैत्री
नष्टेन्द्रियस्य कुलमर्थ परस्य धर्मः ।
विद्याफलं व्यसनिनः कृपणस्य सौख्यं
राज्यं प्रमत्त सचिवस्य नराधिपस्य ।।

अकर्मण्य अथवा आलसी मनुष्य का यश नष्ट हो जाता है, विषम स्वभाव वाले से मित्रता नष्ट हो जाती है, इन्द्रियों के वश में रहने वाले की कुल मर्यादा नष्ट हो जाती है, धन के लोभी का धर्म नष्ट हो जाता है, व्यसनों में फंसने वाले की विद्या नष्ट हो जाती है, कंजूस का सुख नष्ट हो जाता है, मतवाले मंत्रीयुक्त राजा का राज्य नष्ट हो जाता है ।

शोको नाशयते धैर्यं, शोको नाशयते श्रुतम् ।
शोको नाशयते सर्वं नास्ति शोक समोरिपुः ।।

शोक धैर्य को नष्ट कर देता है, शोक (चिन्ता) पढ़ी लिखी विद्या को नष्ट कर देता है, शोक जीवन का सब कुछ नष्ट कर देता है, अतः शोक के समान जीवन में अन्य कोई दूसरा शत्रु नहीं है ।

स्वर विज्ञान से रोगोपचार

स्वर विज्ञान भारत का प्राचीनतम विज्ञान है, हमारे पूर्वज महर्षि, साधु और योगियों का अधिकांश जीवन जंगलों में ही व्यतीत हुआ है, और तपोनिष्ठ होते हुए वे स्वर-विज्ञान के माध्यम से दीर्घजीवी एवं स्वस्थ रहे हैं।

"स्वर विज्ञान से रोगोपचार" अपने ढ़ंग का खोजपूर्ण लेख है, जिसका इस पत्रिका के माध्यम से पहली बार रहस्योद्घाटन हो रहा है।

परमात्मा ने हमारा शरीर इस कौशलपूर्ण तरीके से बनाया है, कि हम प्रयत्न करने पर भी इसको पूरी तरह से जान नहीं पाये हैं, पर यदि सही तरीके से इसकी शक्ति जान लें तो जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव या परेशानी नहीं रहती।

स्वर विज्ञान अपने आप में महत्वपूर्ण विज्ञान है, किस प्रकार से श्वास लिया जाय और किस मात्रा में श्वास छोड़ा जाय, यह इस विज्ञान का मूल आधार है। बांई नासिका से श्वास चलने को इडा में श्वास चलना कहते हैं, इसी प्रकार दाहिनी नासिका से श्वास को पिंगला में चलना और दोनों पुटों से एक समान चलने पर उसे सुषुम्ना कहते हैं। प्राणायाम के द्वारा इसके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

नीचे विभिन्न योगियों और साधकों से मुझे स्वर विज्ञान के माध्यम से रोगनाश के जो उपाय प्राप्त हुए हैं, वे उपाय मैं इस लेख में स्पष्ट कर रहा हूं-मैंने स्वयं अपने ऊपर तथा अपने शिष्यों पर इनका प्रयोग करके देखा है और इस प्रकार से पूर्ण सफलता मिली है। तथा जो रोग दवाइयों से तथा लम्बी चिकित्सा से ठीक नहीं हो सके थे, वे इस प्रकार के प्रयोगों से ठीक हो गए, आप स्वयं भी परीक्षण करके लाभ उठा सकते हैं।

ज्वर

ज्वर का आक्रमण होने पर जिस नासिका से तेज श्वास चलता हो, उस नासिका को हाथ की उंगलियों से बन्द कर देना चाहिए तथा दूसरे नथुने से ही श्वास लेना चाहिए, ऐसा करने पर शीघ्र ही ज्वर कम होकर समाप्त हो जाता है।

यदि सिन्दुवार की जड़ रोगी के हाथ में बांध दी जाय तो कुछ ही समय में ज्वर हमेशा के लिए उतर जाता है।

सिर दर्द

सिर दर्द होने पर दोनों कोहनियों के ऊपर का भाग धोती के किनारे अथवा रस्सी से खूब कस कर बांध देना चाहिए, इससे पांच सात मिनट में ही सिर दर्द समाप्त हो जाता है, पर इसे पूरी तरह से कस कर बांधना जरूरी है।

सिर पीड़ा

जो रोगी हमेशा सिर की पीड़ा से ग्रस्त रहते हों, उन्हें चाहिए कि वे प्रातःकाल उठकर किसी बर्तन में ठंडा जल लेकर नाक से धीरे-धीरे जल खींच कर गले से नीचे उतारे, इस प्रकार एक दो दिन प्रयोग करने पर हमेशा के लिए सिर-पीड़ा समाप्त हो जाती है।

अजीर्ण

हमेशा इस बात का ध्यान रखें कि जब दाहिने नथुने से श्वास का वेग तीव्र हो तब ही भोजन करना चाहिये। ऐसा करने पर कभी भी अजीर्ण, आदि रोग नहीं होते। भोजन के बाद थोड़ी देर तक बांई करवट लेट जाना चाहिये।

उदर रोग

स्थिरता के साथ बैठकर एक टक नाभि मंडल में दृष्टि जमा कर नाभि-मूल का ध्यान करने से एक सप्ताह में उदर रोग समाप्त हो जाता है।

श्वास रोक कर पेट को अन्दर खींच कर नाभि को एक सौ बार मेरूदण्ड से मिलाने से पेट के समस्त रोग समाप्त हो जाते हैं अग्नि बढ़ जाती है, और निश्चित रूप से पाचन शक्ति में सुधार होता है।

प्लीहा (तिल्ली या लीवर रोग)

जिनको यह रोग हो, उसे चाहिये कि वह रात को सोते समय और सवेरे उठते समय बिछौने पर ही हाथ और पैरों को सिकोड़ कर छोड़ना चाहिये और फिर कभी इस करवट तथा कभी उस करवट टेढ़ा-मेढा शरीर करके सारे शरीर को सिकोड़ना और फैलाना चाहिये। इस प्रकार प्रतिदिन पांच सात मिनट का अभ्यास करना चाहिए, कुछ ही दिनों में यह रोग समाप्त हो जाता है। यदि कोई व्यक्ति नित्य ऐसा करता है तो उसे जीवन में प्लीहा रोग की पीड़ा नहीं भोगनी पड़ती।

दंत रोग

दिन में जितना बार भी मल या मूत्र का त्याग करो उस समय दांतों की दोनों पंक्तियों को परस्पर जोरों से भींच देना चाहिए, और तब तक भींचे रखना चाहिए जब तक कि मल-मूत्र विसर्जित न हो जाय, इससे दांत मजबूत होते हैं और दांतों में किसी प्रकार की बीमारी नहीं होती।

स्नानु पीड़ा

पीठ, छाती, बगल, या शरीर में कहीं पर भी स्नानु पीड़ा हो तो उस समय वेदना मालूम पड़ते ही जिस नासिका से श्वांस चलता हो उसे बन्द कर देना चाहिये। पांच सात मिनट बाद अवश्य ही वेदना शान्त हो जाती है।

दमा रोग

जब दमे का जोर का दौरा हो तब जिस नासिका से श्वास चलता हो, उसे बन्द करके दूसरी नासिका से श्वास लेना प्रारम्भ कर देना चाहिए। दस पन्द्रह मिनिट में ही काफी आराम अनुभव होगा।

प्रतिदिन इस प्रकार का अभ्यास किया जाए तो कुछ ही समय में यह रोग हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है, दिन में जितनी हो ज्यादा बार यह क्रिया होगी उतना ही ज्यादा लाभ मिलेगा।

वात रोग

प्रतिदिन भोजन के बाद कंघी से सिर के बाल संवारने चाहिए पर कंघी बालों में इस प्रकार फेरनी चाहिये जिससे कि कंघी के दांते सिर की खाल को स्पर्श करते हों, इसमें रबड़ की कंघी का प्रयोग नहीं करना चाहिये, कंघा करने के बाद वीरासन में पन्द्रह मिनट बैठना चाहिये। ऐसा प्रतिदिन दोनों समय भोजन के बाद करने से पुराने से पुराना वात-रोग जड़ मूल से खतम हो जाता है।

लेखक के पास इस प्रकार के और भी सैंकड़ों प्रयोग है जिससे आसानी से रोग मुक्ति हो जाती है। पत्रिका के अगले अंकों में अन्य रोगों को समाप्त करने के बारे में भी उपाय लिखे जायेंगे। पाठकों को चाहिये कि वे ऐसा रोग होने पर बताई हुई विधि का प्रयोग करें और अपने अनुभवों से पत्रिका को परिचित करावें।

श्रद्धायात्मवतां पुंसां सिद्धिर्भवति नान्यथा।
अन्येक्षां च न सिद्धिः स्यात्तस्माद् यत्नेन साधयेत्॥

श्रद्धावान व्यक्ति को ही सिद्धि मिलती है, दूसरों को नहीं, इसलिए प्रयत्न और श्रद्धापूर्वक साधना करें।

प्रतिक्रिया

मंत्र तंत्र यंत्र का जनवरी अंक देखा, वास्तव में ही
इसमें जो सामग्री आपने दी है, वह गोपनीय और
महत्वपूर्ण हैं, इस प्रकार के अंकों का महत्व भविष्य ही
आंक सकेगा ।

—रमेश : धनबाद

पत्रिका में आप जो सामग्री दे रहे हैं वह सराहनीय
है परन्तु आप इस बात का ध्यान रखें कि मुद्रण की त्रुटियां
न हो, इस अंक में मुद्रण की त्रुटियां आंखों में खटकती है
मुझे विश्वास हैं भविष्य में ये त्रुटियां नहीं के बराबर होंगी ।

—ज्ञानदेव : कुरुक्षेत्र

कनकधारा यंत्र मेरे घर में पिछले तीन वर्ष से हैं
और आज जो कुछ मेरे घर में समृद्धि आ सकी है, उसके
पीछे इस यंत्र का अत्यधिक महत्व हैं। पहले हम गरीब
थे और दरिद्र जीवन व्यतीत कर रहे थे परन्तु जब से
पंडितजी के सम्पर्क में आये है हम सभी दृष्टियों से बराबर
उन्नति करते आ रहे है, इस यंत्र के प्रभाव से ही मेरे
पति की नियुक्ति इस विदेश में महत्वपूर्ण पद पर हो सकी
है, इस कनकधारा यंत्र को अपने साथ यहां पर भी ले
आई हूं ।

—वीणा : मस्कत

कनकधारा यत्र का महत्व अपने आप में अवर्णनीय है
पिछले १५ वर्षों से मेरे पास यह यंत्र है, और इस जीवन
में मैंने कभी भी आर्थिक संकट अनुभव नहीं किया । इस
पत्रिका में कनकधारा यंत्र पर लेख देकर आपने बहुत बड़ा
उपकार किया हैं, यदि आप इसके साथ ही कनकधारा
स्तोत्र भी दे देते तो बहुत ज्यादा उचित रहता ।

—पं० हारशंकर : हैदराबाद

मैंने स्वप्नेश्वरी देवी की पूजा और साधना बचपन में
की थी तब मेरे गुरू ने भी यही मंत्र मुझे बताया था, तब
से लगा कर आज तक मेरे जीवन में जब भी कोई समस्या
आती है, तो मां स्वप्नेश्वरी मुझे उसका सही हल बता
देती हैं ।

—हरीश अग्निहोत्री : टाटानगर

इस पत्रिका को प्राप्त करने के बाद मैं नित्य आरती
में समर्पण-स्तुति करने लगी हूं और यह स्तुति मेरे पूरे
परिवार को अच्छी लगी है ।

—कोमल : मुरादाबाद

पूज्य पंडितजी ने आज से तीन वर्ष पूर्व मुझे श्वेतार्क
गणपति का विग्रह दिया था और इन तीन वर्षों में व्यापार
में जिस स्तर पर मैं पहुँचा हूँ, उससे पूरा प्रान्त आश्चर्य-
चकित है, मुझे स्वप्न में भी कई बार गणपति के दर्शन
हुए है, यह आपके मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त श्वेतार्क
गणपति का ही प्रभाव है, इस प्रभाव को मैंने कई बार
अनुभव किया है ।

—गोवर्धनदास : लखनऊ

मेरे गुरू ने मुझे बचपन में सियार सिंगी दी थी जो
कि अब तक मेरे पास है, यद्यपि मैं अधिकतर खतरनाक
कार्यों में उलझता ही रहा हूँ, परन्तु आज तक मेरे शरीर
पर एक भी खरोंच नहीं आई, वास्तव में ही इस कलियुग
में इतनी महत्वपूर्ण वस्तु भी संभव है, मैं अपने पुत्र के
लिये भी इस प्रकार की एक सियार सिंगी आपसे चाहता हूँ ।

—पीताम्बर भदावा : बम्बई

प्रचण्ड तूफान से भी टक्कर लेने वाला बगला मुखी यंत्र

बगलामुखी-साधना भारत की प्राचीनतम एवं दस महाविद्याओं में से एक रही है, कलियुग में तो इसका प्रभाव पग-पग पर देखा जा सकता है ।

शत्रुओं पर हावी होने, बलवान शत्रुओं का मान-मर्दन करने भूतप्रेतादि को दूर करने, हारते हुए मुकदमों में सफलता पाने, एवं समस्त प्रकार से उन्नति करने में बगलामुखी यंत्र श्रेष्ठतम माना गया है योगियों तांत्रिकों मांत्रिकों ने इसकी भूरिभूरि प्रशंसा की है, जिसके हाथ पर यह यंत्र बंधा होता है उस पर किया गया तांत्रिक प्रभाव निष्फल रहता है ।

पहली बार प्रामाणिक विवेचना के साथ यह महत्वपूर्ण लेख इस पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत है—

भारतीय तंत्र मंत्र साहित्य अपने आप में अद्भुत आश्चर्यजनक एवं रहस्यमय रहा है। ज्यों ज्यों हम इसके रहस्य के मूल में जाते हैं, त्यों त्यों हमें विलक्षण अनुभव होते हैं। इस साहित्य में कुछ तंत्र-मंत्र तो इतने समर्थ बलशाली एवं शीघ्र फलदायी हैं कि देख कर चकित रह जाना पड़ता है। ऐसे ही यंत्रों में एक यंत्र है-बगला मुखी यंत्र-जो प्रचण्ड तूफान से भी टक्कर लेने में समर्थ है।

भारत के लगभग सभी तांत्रिकों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है कि बगला मुखी यंत्र के समान और कोई अन्य विधान नहीं है, जो कि इतने वेग से और तुरन्त प्रभाव दिखा सके। एक तरफ जहां यह यंत्र शीघ्र ही सफलतादायक है, वहीं दूसरी ओर विशेष अनुष्ठान एवं मंत्र जप के द्वारा जो बगलामुखी यंत्र सिद्ध किया जाता है, वह तुरन्त कार्यसिद्धि में सहायता प्रदान करता है।

ब्रिटेन के प्रसिद्ध तंत्र विशेषज्ञ श्री समरफिल्ड ने यह मंत्र सिद्ध कर और इसका प्रभाव देख कर कहा था कि पूरे विश्व की ताकत भी इस यंत्र से टक्कर लेने में असमर्थ है, असहाय है।

दुर्लभ ग्रन्थ मंत्र-महार्णव में इसके बारे में लिखा है-

ब्रह्मास्त्रं च प्रवक्ष्यामि सद्य प्रत्यय कारणम् ।
यस्य स्मरणमात्रेण पवनोऽपि स्थिरायते ॥

अर्थात इस मंत्र को सिद्ध करने के बाद मात्र स्मरण से ही प्रचण्ड पवन भी स्थिर हो जाता हैं।

भारत के श्रेष्ठ और अद्वितीय तांत्रिकों ने भी एक स्वर से इस यंत्र की सराहना की है-

जिस व्यक्ति के घर में यह यंत्र या जिस व्यक्ति ने अपनी भुजा पर इस यंत्र को बांध रखा है, उस पर कभी भी शत्रु हावी नहीं हो सकते, न वह जहर से मर सकता है, न उस पर आक्रमण से सफलता पाई जा सकती है, और न उसकी अकाल मृत्यु ही संभव है।

त्रिजटा अघोरी

आज के युग में जब पग-पग पर शत्रु हावी होने की चेष्टा करते हैं और हर प्रकार से चारों तरफ शत्रु नीचा दिखाने का प्रयत्न करते हैं तब प्रत्येक उन्नति चाहने वाले व्यक्ति के लिये यह साधना या यह यंत्र धारण करना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य समझा जाना चाहिये।

—किंकर बाबा

सारे यंत्रों में बगला मुखी यंत्र सर्वश्रेष्ठ है, अद्भुत प्रभावशाली है तथा किसी भी प्रकार के मुकदमें में पूर्ण सफलता देने में सहायक है।

—स्वामी बोधत्रयजी

यंत्र तो भारत में सैकड़ों है परन्तु यह यंत्र अपने आप में महायंत्र है और शत्रुओं का मानमर्दन करने में पूरी तरह से सक्षम है।

स्वामी अरूपानंदजी

जो अपने जीवन में बिना किसी बाधाओं के प्रगति चाहता है, प्रगति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचना चाहता है, उसके लिये बगलामुखी साधना या बगलामुखी यंत्र धारण करना आवश्यक है।

—मां भारती

इस यंत्र का ही यह प्रभाव है कि इसे तंत्र-मंत्र के क्षेत्र में सर्वोपरि मान्यता मिलती रही, और इसके बारे में शोध और प्रयोग प्राचीनकाल से बराबर होता रहा है. आश्चर्य की बात तो यह है कि इस यंत्र का उपयोग जहां हिन्दू राजाओं ने अपने शत्रुओं के मर्दन के लिए किया, वहां मुस्लिम शासकों ने भी इसका प्रयोग कर कार्यों में सफलता प्राप्त की। रिचर्डब्रन के इतिहास में उल्लेख मिलता है कि औरंगजेब ने अपने शत्रुओं को परास्त करने में बगला मुखी साधना कराई और सफलता प्राप्त की। हिन्दू शासकों में तो चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, समुद्र गुप्त और शिवाजी जैसे प्रतापी राजाओं ने इस मंत्र का प्रयोग और साधना अपने तांत्रिकों से कराकर शत्रुओं पर विजय एवं सफलता प्राप्त की।

इसकी साधना से मारण, मोहन वशीकरण, उच्चाटन एवं विद्वेषण प्रयोग भली भांति सफलता पूर्वक सम्पन्न किये जाते हैं। जहां तक मेरा अनुभव है, इस मंत्र की साधना से बांझ स्त्री को मनचाही संतान प्राप्त करने में सहायता दी जा सकती है। दरिद्र व्यक्ति को लखपति बनाने के लिये मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है और विपरीत मुकदमे में भी पूर्ण सफलता प्राप्त की जा सकती है, इसके साथ ही साथ शत्रुओं का मानमर्दन कर उन पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

परन्तु भूल करके भी सामान्य व्यक्ति को इस प्रकार की साधना में नहीं बैठ जाना चाहिए, क्योंकि यह साधना तलवार की धार के समान है अतः यदि थोड़ी सी भी गलती हो जाती है तो साधना करने वाला व्यक्ति ही समाप्त हो जाता है। मेरे अनुभव से बिना पूरा ज्ञान प्राप्त किये जिन लोगों ने इस साधना को प्रारम्भ की, वे साधना काल में ही पागल होते देखे गए, और बड़ी कठिनाई से उन्हें सामान्य अवस्था में लाया गया।

अतः सामान्य पंडित भी इस प्रकार की साधना सम्पन्न करने में हिचकिचाता है,जो भी व्यक्ति इस साधना को सम्पन्न करना चाहे उसे चाहिए कि वह योग्य गुरू के निर्देशन में ही इस कार्य को सम्पन्न करे और यदि पंडितों से यंत्र सिद्ध करवा कर धारण करना चाहे तो उसे चाहिए कि योग्य पंडितों का चयन करके ही यह साधना सम्पन्न करवावे और इसमें किसी प्रकार की न्यूनता न रखें।

साधना काल में प्रत्येक साधक को दृढता के साथ इन से सम्बन्धित नियमों का पालन करना चाहिए और वह किसी प्रकार की शिथिलता न बरतें।

साधना काल में ध्यान रखने योग्य बातें

१. बगला मुखी साधना में साधक को पूर्ण पवित्रता के साथ जप कार्य करना चाहिए और उसे पूरी तरह से ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

२. साधक को पीले वस्त्र धारण करने चाहिए, धोती, तथा ऊपर ओढ़ने वाली धोती-दोनों पीले रंग में रंगी हुई हो।

३. साधक एक समय भोजन करे और भोजन में बेसन से बनी हुई वस्तु का प्रयोग अवश्य करे।

४. साधक को दिन में नींद नहीं लेनी चाहिए, न व्यर्थ की बातचीत करे और न किसी स्त्री से किसी प्रकार का सम्पर्क ही स्थापित करे।

५. साधना काल में बगला मुखी यंत्र बनाकर स्थापित कर उसके सामने मंत्र जप करें।

जिज्ञासा

प्रश्न : शक्तिपात क्या है और यह कैसे संभव है ?

प्रदीप मेवाड़ा—भिलाई

उत्तर : मानव जीवन तभी पूर्णता प्राप्त करता है जबकि वह भौतिक जीवन से ऊपर उठ कर अपने शरीर को आध्यात्मिक जीवन की ओर बढ़ाने के लिये प्रेरित करता है, इसके लिये वह शरीर में स्थित सात चक्रों को खोलने का प्रयत्न करता है और जब उसका सहस्रार चक्र खुल जाता हैं तो यौगिक शब्दों में उसे कुण्डलिनी जागरण कहते हैं।

परन्तु कुछ परिस्थितियों में साधक के प्रयत्न करने पर भी शरीर स्थित चक्र नहीं खुलते, इसका कारण शिष्य के मन में सन्देह, गुरू के प्रति अविश्वास, अपने प्रति अनास्था या पूरी तरह से आज्ञा पालन न होना होता है। जब प्रयत्न करने पर भी उसकी कुण्डलिनी जाग्रत नहीं होती तब गुरु अपनी साधना के बल से, या यों कहें कि गुरू अपने पास संचित साधना का कुछ भाग, विशेष विधि से शिष्य को दे कर उसकी कुण्डलिनी जाग्रत कर देते हैं, इस क्रिया को शक्तिपात कहते हैं।

प्रश्न : क्या काशी (वाराणसी) की कोई विशेष महत्ता है ?

शैल—वाराणसी

उत्तर : हाँ, काशी प्राचीन काल से देश की तांत्रिक नगरी रही है और यह सप्तपुरियों में से एक पुरी है, इसके पास ही गंगा नदी प्रवाहित होती है, साथ ही साथ यहां विश्वेश्वर का प्रसिद्ध मंदिर है, पर इससे भी बड़ा और गोपनीय तथ्य यह है कि काशी नगरी के नीचे जमीन में एक और नगरी बसी हुई है जो कि आध्यात्मिक और तांत्रिक नगरी है। इस नगरी में सैकड़ों हजारों वर्षों से साधु तपस्यारत या साधनारत है। इस नगरी में सामान्य मानव का प्रवेश संभव नहीं है, परन्तु जो साधक साधना क्षेत्र में एक विशेष स्तर को प्राप्त कर लेता है, वह इस नगरी में विचरण कर सकता है, और साधना क्षेत्र में विशेष अनुभव तथा मार्गदर्शन प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार की नगरी का सौभाग्य पूरे भारत में मात्र काशी को ही प्राप्त है।

प्रश्न : कोई भी यंत्र केवल मात्र घर में रख देने से ही या धारण करने से ही उसका फल कैसे प्राप्त हो सकता है जबकि धारण करने वाले को उसका कुछ भी ज्ञान नहीं होता ?

प्रदीप्त शर्मा—कलकत्ता

उत्तर : जिस प्रकार किसी चालक को पूरी कार की मशीनरी खोल कर जोड़ने के ज्ञान की आवश्यकता अनिवार्य नहीं, यदि उसके पास कार होती है तो वह उसे चला कर अपने गन्तव्य स्थल तक पहुँच जाता है, इसी प्रकार किसी यंत्र को धारण करने के लिये उसे उसके पूरे ज्ञान या साधना पक्ष की जानकारी अनिवार्य नहीं होती।

कोई भी यंत्र या मूर्ति अथवा विग्रह जब पूर्ण विधि विधान के साथ मंत्र चैतन्य, मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठा युक्त कर दिया जाता हैं तो वह यंत्र या मूर्ति स्वयं चैतन्य हो जाती है जिस प्रकार बैटरी को चार्ज कर लेने के बाद उससे बिजली प्राप्त की जा सकती है, ठीक उसी प्रकार जब यंत्र पर या विग्रह पर मंत्र साधना की जाती है तो वह पूर्ण प्रभाव युक्त हो जाती है।

जिन मन्त्रों से उस यंत्र को सिद्ध किया जाता है उस यंत्र में वह प्रभाव पूर्ण रूप से होता है, इसके बाद जब सिद्ध यंत्र को जो व्यक्ति धारण करता है या अपने घर में स्थापित करता हैं तो उसे पूर्ण लाभ प्राप्त होने लगता है, यह आवश्यक नहीं होता कि यंत्र या विग्रह किसी विशेष नाम से ही सिद्ध हो।

जिस प्रकार अगरबत्ती जो भी व्यक्ति अपने घर में जलाता है उसके घर में सुगन्ध फैल जाती है, सुगन्ध के लिये अगरबत्ती को कोई विशेष नाम से खरीदने की आवश्यकता नहीं होती, ठीक इसी प्रकार यंत्र मूर्ति या विग्रह जो धारण करता है या अपने घर में रखता है उसे ही पूरा लाभ प्राप्त होता है। विजय गणपति विग्रह, श्रीयंत्र, कनक धारा यंत्र, बगलामुखी यंत्र आदि यंत्र इसी प्रकार मंत्र सिद्ध, मंत्र चैतन्य और प्राण प्रतिष्ठा युक्त होते हैं जिससे कि वे जिस घर में भी होते है उसी घर में पूर्ण समृद्धि और सौभाग्य देने में पूर्ण समर्थ हो जाते हैं।

प्रश्न : क्या लक्ष्मी प्राप्ति के लिये कमल गट्टे की माला आवश्यक है और क्या सामान्य माला प्रभावयुक्त होती है?

मंजरी ढोलकिया—बंबई

उत्तर : लक्ष्मी का निवास कमल में ही माना गया है, और इसलिये तांत्रिक-मांत्रिक ग्रन्थों में लक्ष्मी से संबंधित अनुष्ठान के लिये कमल गट्टे की माला को विशेष महत्व दिया गया है, यह स्पष्ट है कि जब तक माला मंत्र सिद्ध और चैतन्य नहीं होती तब तक उस माला से जो भी प्रयोग किये जाते हैं, उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती। यह आवश्यक है कि माला मंत्रसिद्ध और चैतन्य हो तो निश्चय ही साधना में सफलता प्राप्त होती है।

प्रश्न : कई बार प्रयत्न करने पर भी साधना में सफलता नहीं मिलती क्या इसका कोई विशेष कारण होता है?

ज्ञान चतुर्वेदी-लखनऊ

उत्तर : प्रत्येक साधना अपने आप में पूर्ण होती हैं, आवश्यकता इस बात की है कि जो साधक साधना करना चाहे, उसे उस साधना के प्रति पूर्ण निष्ठा और विश्वास हो, अविश्वास की नींव पर सफलता का महल खड़ा नहीं किया जा सकता. सैकड़ों-हजारों साधकों ने साधनाएं की हैं और वे उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त कर सके है तो यह निश्चित है कि यदि योग्य गुरु के मार्गदर्शन में साधना की जाय तो अवश्य ही उसे सफलता प्राप्त होती है।

साधक में धैर्य, विश्वास और गुरु के प्रति अटूट आस्था होना आवश्यक है क्यों कि साधना में थोड़ी भी गलती सफलता में न्यूनता ला सकती है, अत: समय समय पर यदि उसे मार्गदर्शन प्राप्त होता है तो वह शीघ्र सफलता तक पहुँच पाता है।

प्रश्न : क्या तांत्रिक साधनाओं में शराब, मांस, स्त्री गमन आदि अनिवार्य है, क्या इन साधनाओं को महिलाएं कर सकती है?

योगी विवेक-हरिद्वार

उत्तर : तंत्र के किसी भी ग्रन्थ में शराब, मांस या स्त्री गमन आवश्यक नहीं है, अपितु मेरी समझ में तो ये सब त्याज्य है, इनके सेवन से साधना में बाधाएं ही आती हैं, तांत्रिकों ने अपने स्वार्थ के लिये इन वस्तुओं का प्रयोग अनिवार्य कर दिया है, तंत्र अपने आप में श्रेष्ठतम साधना है, क्योंकि किसी भी प्रकार की पूर्णता के लिये तंत्र पूर्ण रूप से सहायक है, तंत्र का अर्थ है—भली प्रकार योजना बद्ध रूप से पूर्णता या अपने लक्ष्य तक पहुँचना। प्रजातंत्र भी तो तंत्र ही है जिसका तात्पर्य प्रजा को प्रत्येक दृष्टि से पूर्णता तक पहुंचाना है।

स्त्रियां भी तांत्रिक साधनाएं कर सकती है, भारत में सैकड़ों ऐसी महिलाएं हैं जो कि इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रही हैं, भारतीय धर्म के अनुसार महिला को अपने पति या पिता से आज्ञा प्राप्त कर के ही इस प्रकार की साधना में योग्य गुरु के निर्देशन में आगे बढना चाहिये।

प्रश्न—आप भारत की प्राचीन विद्याओं को प्रकाश में लाने का पुण्य कार्य कर रहे हैं, हमारे जीवन का आधार वेद रहे है, प्रत्येक भारतीय यह चाहता है कि प्रातःकाल उठते समय उसके घर में वेद ध्वनि प्रवहित हो। क्या आपने इस संबन्ध में भी कुछ सोचा है?

सत्या वाजपेयी—नैनीताल

उत्तर—मंत्र का आधार स्वर लहरी होता है, यदि प्रातःकाल घर में वेद ध्वनि प्रवहित हो तो निश्चय ही घर का वातावरण मधुर तथा सुरभित बनता है, बालकों पर इसका अनुकूल असर पड़ता है और पूरा घर एक दैदीप्य वातावरण से महकने लगता है।

केन्द्र ने कुछ समय पहले इस कार्य को हाथ में लिया था और वेद की मूल ध्वनि से टेप तैयार की थी, जो कि मंगलाचरण से युक्त थी, इस टेप में वे वेद मंत्र ध्वनित हैं जो प्रातःकाल घर के वातावरण को अनुकूल बनाने में समर्थ और सहायक है, पूरे भारत में इस प्रयास का समर्थन हुआ है और लोगों ने इस प्रकार के प्रभाव को अनुभव किया है।

इस प्रकार की टेप तैयार करने पर व्यय ६०) रु० आया है, टेप रिकार्डर से इसे बजाया जा सकता है, कोई भी गृहस्थ इस प्रकार की टेप पत्रिका कार्यालय से मंगा सकता है।

प्रश्न—क्या दूर बैठे गुरु शिष्य के गृहस्थ जीवन की समस्या को जान सकते हैं?

उत्तर—यह गोपनीय है पर मैं इसे स्पष्ट कर देता हूँ प्रत्येक योग्य गुरु प्रातः ४ बजे से ६ बजे तक अपने शिष्यों के सम्पर्क में रहता है उस समय गृहस्थ शिष्य अपनी जो भी मनोव्यथा कहता है, वह साधना के माध्यम से गुरु जान लेते हैं और यथा सम्भव उसकी समस्या का हल कर लेते हैं, पर इसके लिये यह आवश्यक है कि वह गुरु द्वारा दीक्षित हो।

उस दिन स्वामी विवेकानन्द बीमार थे, ज्वर से पीड़ित, लगभग एक सौ चार डिग्री से भी ज्यादा ताप। सारा शरीर आग में फुंक रहा था, और पास बैठे रामकृष्ण चुपचाप बालक विवेकानंद को निहार रहे थे।

आखिर विवेकानंद से चुप न रहा गया, बोले-मैं ज्वर से मरा जा रहा हूँ, और आप कुछ कर ही नहीं रहे हैं? मैं जो कह रहा हूँ, क्या आप सुन नहीं पा रहे है?

—तू मुझे क्या कह रहा है मां (काली) को कह दे न! रामकृष्ण का सपाट उत्तर था—

—मैं मां को कह तो रहा हूँ—विवेकानन्द बोले......

रामकृष्ण बीच में ही बात काट कर बोले-तुम्हारी वाणी में आर्द्रता नहीं है, अपनत्व और दीनता नहीं है, इसलिये मां तक तेरी आवाज नहीं पहुँच रही है, अरे! जब तेरी वाणी का असर मुझ पर ही नहीं हो रहा है तो मां काली के चित्त पर क्या होगा? उसके लिये तो स्वर में वात्सल्य, दीनता जरूरी है रे!

बालक पूरे अपनत्व से कहे, और मां सुने नहीं, यह असंभव है।

ये अचरज भरी जड़ी बूंटियां

यह संसार विचित्र एवं रहस्य से परिपूर्ण है, परमात्मा ने इसके कण-कण में रहस्यात्मकता का संसार बसा दिया है प्रकृति का प्रत्येक पत्ता अपने आप में दुर्लभता समेटे हुए है, आवश्यकता है उसे समझने की, परखने की, और उससे परिचित होने की। प्रस्तुत लेख इन्हीं रहस्यों का उद्घाटन कर रहा है एक खोजपूर्ण सारगर्भित दुर्लभ लेख·······

कहते हैं कि एक बार ब्रह्माजी ने च्यवन ऋषि को आदेश दिया कि जाओ, पृथ्वी पर जो भी पौधा, जड़ या पत्ता व्यर्थ का हो उसे तोड़ लाओ। च्यवन ऋषि भटकते रहे और ग्यारह साल बाद ब्रह्माजी के सामने नतमस्तक होकर बोले—'प्रभो! इन ग्यारह वर्षों में पूरी पृथ्वी पर भटका हूं, प्रत्येक पौधे के गुण-दोष को परखा है पर पृथ्वी पर एक भी पत्ता ऐसा नहीं मिला जो कि किसी न किसी रोग उन्मूलन में सहायक न हो।'

च्यवन ऋषि के इस एक वाक्य में पेड़-पौधों, जड़ी-बूंटियों की महत्ता समझ में आ जाती है। कुछ ऐसी अलभ्य जड़ी-बूंटियों की जानकारी मिली है जो मानवता के लिये कल्याणकारी हैं, लेकिन अभी तक गोपनीय रही है, संभवतः पहली बार प्रकाश में आ रही है।

कायाकल्पी जड़

हिमालय की तराई में यह दुर्लभ पौधा प्राप्त होता है। यह मुश्किल से चार फुट ऊंचा तथा इसके पत्ते चौड़े होते हैं। यह पौधा बहुत कम देखने में आता है और पचास-साठ मील के घेरे में एक-आध पौधा ही ऐसा पाया जाता है। पहाड़ी भाषा में इसे कायाकल्पी कहा जाता है जो कायाकल्प का अपभ्रंश सा लगता है। इस पौधे की जड़ अंगूठे जितनी मोटी और पीले रंग की होती है, जो जमीन के अन्दर जाकर कुछ दूरी पर पुनः बाहर निकल आती है।

परमहंस स्वामी महेशानन्द ने इस पौधे के बारे में जानकारी दी थी, कि इसकी जड़ को यदि पकी हुई मूंग की दाल में घिसकर किसी रोगी, वृद्ध या जर्जर व्यक्ति को खिलाई जाय तो आश्चर्यजनक रूप से उसका कायाकल्प हो जाता है, मेरे सामने इसका प्रत्यक्ष प्रयोग करके भी दिखाया गया था।

इसके बाद उस तरफ काफी भटकने पर भी इस प्रकार का पौधा फिर दिखाई नहीं दिया, यदि गंभीरता पूर्वक इसे खोजा जाय तो ऐसा पौधा मिल सकता है।

पथरी का उपचार : चंदलिया

चंदलिया राजस्थान के पश्चिमी भाग में बहुतायत से पैदा होता है, इसे उबाल कर सब्जी के रूप में प्रयोग किया जाता है।

यदि इसे मात्र उबाल कर बिना नमक, मिर्च लगाये, नित्य सेवन किया जाय तो एक महीने के भीतर ही पथरी अन्दर ही अन्दर गलकर समाप्त हो जाती है। मैंने प्रयोग के तौर पर पेट से निकली पथरी को इस प्रकार के उबले चंदलिये में रख दिया था तो वह पत्थर आश्चर्यजनक रूप से गलने लग गया था, मैंने कई लोगों को इसका प्रयोग करने की राय दी, और उन सभी को सफलता मिली है।

स्वप्न दृष्टा लकड़ी : कानाता

टिहरी गढ़वाल की तरफ एक पेड़ होता है जिसे वहां

'कानाता' कहते हैं। यह पेड़ किसी किसी खेत में ही देखने को मिलता है, वहां इसे शिव का प्रतीक मानते हैं।

कहा जाता है कि इस पेड़ की लकड़ी से बनी चारपाई पर सोने से जो स्वप्न आता है, वह दूसरे दिन घटित होता ही है, या यों कहा जाए कि इस प्रकार की चारपाई या लट्ठे पर सोने से होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास स्वप्न के माध्यम से हो जाता है।

भूतकेशी जड़

देहरादून एवं मंसूरी के आसपास एक छोटा सा पौधा बहुतायत से पाया जाता है जिसे वहां भूतकेशी के नाम से पुकारते हैं। नजर, टोना-टोटका, भूत-प्रेत बाधा आदि से बचने के लिए इसे गले या बांह अथवा कमर पर बांधा जाता है। मासिक धर्म के नियमित न होने या गर्भपात होने की अवस्था में यह जड़ रामबाण की तरह काम करती है।

काला धतूरा ✓

मध्य प्रदेश और राजस्थान में काला धतूरा काफी मात्रा में पैदा होता है, यह जहरीला पौधा है, इसके फूल चुनकर सुखा दिये जाते हैं।

यदि किसी को जलंदर या जलोदर की बिमारी हो तो इस प्रकार के फूलों को चिलम में रखकर पीने से जलोदर रोग समाप्त हो जाता है।

बुद्धिवर्धक : शंख पुष्पो ✓

यह अत्यन्त सुलभ है और पहाड़ी ढलान पर अधिकायत से उगती है। इसके पुष्प शंख के आकार के पीले सफेद या लाल होते हैं। इसके पुष्पों को घोटकर पीने से बुद्धि एवं स्मरण शक्ति तेज होती है। यह पेट सम्बन्धी किसी भी प्रकार के रोग को समाप्त करने में सहायक होती है।

ओजवर्द्धक : रूद्रवती

रूद्रवती का पौधा चने के पौधे के समान ऊंचा और उसी प्रकार की पत्तियों से युक्त होता है, नित्य चार छः पत्तियां चबाने से ही सप्ताह भर में अद्भुत बल और ओज बढ़ता है तथा नामर्दी, धातु क्षीणता, वीर्यपतन, शिश्न-दुर्बलता, शीघ्रपतन आदि रोग जड़ से ही समाप्त हो जाते हैं, यह भी पहाड़ी ढलान पर उगती है।

मैंने ऊपर जिन पौधों के गुण धर्म आदि बताये हैं उनका उपयोग किसी विश्वस्त एवं योग्य चिकित्सक की राय से ही करना चाहिए, बिना सोचे समझे उपयोग करने से हानि भी हो सकती है।

तारूण्यदायक : अमर कंटकी

यह विश्व का सर्वाधिक कीमती और दुर्लभ पौधा माना गया है। यह हिमालय के ऊपरी इलाकों में पाया जाता है। इसका पौधा मात्र ५०-५५ से.मी. ऊंचा एवं पत्ते रहित होता है। इसकी डालियां कंटीली होती हैं इसकी जड़ ही उपयोगी मानी गयी है।

एक साधु के साथ मुझे यमुनोत्री की यात्रा करने का मौका मिला था। जिस समय हम यात्रा पर रवाना हुए साधु के गुरुभाई भी अनायास ही मिल गये थे। गुरुभाई वृद्ध, जर्जर और अत्यंत बूढ़े थे, चेहरा झुर्रियों से भरा हुआ था।

हम लोगों ने जानकीचट्टी पर विश्राम किया। सायंकाल मूंग की दाल और रोटी बनायी, साधु कुछ क्षणों के लिए लुप्त हो गये थे और जब वे लौटे तब उनके हाथ में हाथ के अंगूठे जितनी मोटी और गंदमी रंग की एक जड़ थी।

उन्होंने वह जड़ दाल में घिस दी, वह दाल उस वृद्ध गुरुभाई को दे दी, गुरुभाई ने वह पूरी दाल खा ली।

कुछ ही समय में उस वृद्ध का पूरी तरह से कायाकल्प हो गया था। शरीर की झुर्रियां मिट गई थीं, चेहरे पर ओज और लावण्य आ गया था, वह स्वस्थ, सबल युवक की तरह दिखायी देने लगा था यही नहीं अपितु उसके सिर के सफेद बाल भी काले रंग में परिवर्तित हो गये थे।

कैंसर-नाशक : कुमारिका

यह पौधा भी दुर्लभ है, तथा हिमालय के ऊपरी भाग में ही मिलता है। बद्रीनाथ के विश्व प्रसिद्ध मंदिर से आगे ऊपरी भाग में यह पौधा देखा गया है जिसे वहां के निवासी 'कुमारिका' कहते है।

इस पौधे के बारे में भी एक उच्चस्तरीय साधु से ही जानकारी मिली थी। साधु विज्ञान में एम.एस सी. थे। और लगभग अस्सी वर्ष की आयु के थे। उस साधु ने बताया था कि उस पौधे की पत्तियों में 'आइसोटोप्स' विद्यमान है और यदि मात्र सात दिन तक इन पत्तियों का सेवन किया जाए तो कैंसर जैसा भयानक रोग जड़मूल से समाप्त हो जाता है।

इस पौधे की पत्तियां नुकीली तथा लंबी होती है। ब्लड कैंसर, बोन कैंसर या किसी भी प्रकार का कैंसर मात्र सात दिनों के सेवन से ही समाप्त हो जाने का दावा उन साधु का था, जो उनके अनुभव पर आधारित था।

नपुंसकता-नाशक : आमतरी

आमतरी पौधे के बारे में भी एक हिमालय वासी से ही जानकारी मिली थी। गंगोत्री के मार्ग में लांका नामक स्थान आता है, जहां तक बसें जाती हैं उस स्थान और गंगोत्री के बीच यह पौधा प्राप्त होता है। इसके पत्ते हल्के सिंदूरी रंग के होते हैं जो कई मामलों में उपयोगी हैं, इसके पत्ते सुखाकर रख दिये जाते है।

एक मास तक दूध में मिलाकर इनके पत्तों का सेवन किया जाए तो नपुंसक भी पूर्ण पुरुष बन जाता है। धातु संबंधी किसी भी प्रकार के रोग में यह रामबाण है।

पंद्रह दिन तक शहद के साथ लेने से जोड़ों का दर्द, कमजोरी, ज्योति-क्षीणता आदि समाप्त हो जाती है तथा शरीर में ताकत और तेज आता है।

यदि इस औषधि को मात्र सात दिन तक पानी के साथ लिया जाए तो मूत्र रोग, गुरदे के अन्य रोग तथा पेट संबंधी रोग समाप्त हो जाते हैं।

दो मास के सेवन से जलोदर, टी.बी. आदि रोग भी समाप्त हो जाते हैं।

इन पत्तों को आग पर रख कर धुआं देने से कई दिनों तक घर में कीटाणु नहीं रहते।

पोलियो रोग के लिए तो ये पत्ते अद्भुत चमत्कारी हैं।

चंचलता का दूर हो जाना, आरोग्य, सहृदयता, देह से सुगंध उठना, मल मूत्र में न्यूनता, चेहरे पर कांति प्रसन्नता, वाणी में मधुरता, यह सब योग की प्रगति के चिन्ह हैं।

जिस अवस्था में मनुष्य के पीठ पीछे प्रशंसा होने लगे, सब कोई उससे निर्भय रहे, वही योग सिद्ध के लक्षण हैं।

स्तम्भन-प्रयोग

शत्रु की बुद्धि गति-मति बांधने व अपने अनुकूल बनाने का सफल प्रयोग

स्तंभन प्रयोग भारत का प्राचीन प्रयोग रहा है,यह मूलतः तान्त्रिक प्रयोग है, अतः किसी भी साधक को ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण इस प्रकार के प्रयोग नहीं करने चाहिए, साथ ही उन्हें योग्य गुरू के निर्देशन में ही इस प्रकार की साधनाएं सम्पन्न करनी चाहिए।

पाठकों की जानकारी के लिए एक प्रामाणिक स्तंभन प्रयोग प्रस्तुत है... ....

आज जीवन में प्रतिस्पर्धा बढ गई है, और प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्ति आगे बढ़ने के लिये बेताब है। इस बेताबी में उसे भले बुरे का भी ज्ञान नहीं रहा है और वह हर दृष्टि से अड़चनें डालने में ही अपना सुख समझता है, ऐसी स्थिति में केवल मात्र स्तम्भन-प्रयोग ही सहायक हो सकता है, जो कि शत्रु की बुद्धि, गति मति बांधकर उसे अनुकूल बनाया जा सकता है।

प्रयोग १ :

किसी भी रविवार को हल्दी, रक्त-चन्दन तगर, और गो मूत्र लेकर उसकी गाढ़ी सी स्याही बनावे और फिर एक सफेद वस्त्र को हल्दी के रंग में रंगकर उसे सुखाकर उस पर उस स्याही से अष्टदल बनावे तथा प्रत्येक दल में निम्न आठ अक्षरों को अंकित करे - १) ॐ २) ॐ ३) ग्लौं ४) ग्लौं ५) चं ६) टं ७) चं ८) टं।

अष्टदल के भीतर शत्रु का नाम लिखकर उसके आगे स्तंभय शब्द अंकित करे। इसके बाद उस वस्त्र को समेटकर पीले धागे से बांध ले और उस पर सात लोहे की कीलें रखकर उस पर जहां दीमक लगी हो उस मिट्टी को लेकर कीलों पर छिड़क दे, और फिर उस पर पीला धागा लपेटकर उस पर भेड़ का मूत्र छिड़क दे, फिर उस वस्त्र को एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर उसमें रख दें और उस पर पत्थर रखकर गड्ढे को बंदकर दे, इसके बाद साधक को हल्दी की माला से नैऋत्य दिशा की ओर मुंह कर निम्नलिखित मंत्र की माला नित्य फेरनी चाहिए, इस प्रकार ११ दिन तक करने से शत्रु वश में हो जाता है।

प्रयोग : २

कुछ ग्रन्थों में स्पष्ट है कि इस प्रकार का जो वस्त्र तैयार हो उसे गड्ढे में न गाड़कर वस्त्र को समेट अपने नीचे रखकर उस पर बैठकर नैऋत्याभिमुख होकर निम्न मंत्र का एक हजार जप हल्दी की माला से करने से शत्रु वश में हो जाता है।

मंत्र-ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं कामाक्षि मायारुपिणि सर्वमनोहारिणि स्तंभय स्तंभय रोधय रोधय मोहय मोहय क्लां क्लीं क्लूं कामाक्षि कान्हेश्वरि हुं हुं हुं।

साधक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि मजाक के लिये या मन में दुर्भावना रखकर इस मंत्र की साधना नहीं करनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति प्रगति में बाधक हो रहा है तो उसे ऐसा रोकने लिये इस साधना का प्रयोग किया जाना चाहिए।

कर्ण पिशाचिनी साधना

कर्ण पिशाचिनी साधना से थोड़े बहुत रूप में प्रत्येक भारतीय परिचित है, वर्तमान युग में जब 'चमत्कार' ही सिद्धि का पर्याय हो गया है, तब यह साधना प्रत्येक अविश्वासी व्यक्ति को पूर्ण रूप से विश्वास दिलाने में समर्थ है।

पर यह साधना गोपनीय रही है, जिनको ज्ञान है, उन्होंने इस साधना को उजागर करना ठीक नहीं समझा क्योंकि इससे उनके हितों पर आघात होता था।

इन पन्नों पर यह गोपनीय साधना पूर्ण प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट है, साधकों को चाहिए, कि वे योग्य गुरु के निर्देशन में ही यह साधना सम्पन्न करें, अकेले नहीं।

जोधपुर में रामाकिशन नाम का एक व्यक्ति है, जो आते ही आपको आपके नाम से पुकारेगा और पूछेगा कि आप अमुक स्थान से आये है आपकी कार का नम्बर यह है ....आदि आदि।

टोंक के पास स्वामी गिरजा स्वामी है जो कि व्यक्ति को देखते ही उसके भूतकाल के बारे में अक्षरशः सही बता देते हैं और वे यहां तक बता देते हैं, कि एक दिन पहले आपने क्या भोजन किया है कौन सी सब्जी खाई है, और यहां तक कि प्रातः आपने अपनी पत्नी से क्या-क्या बातें की हैं?

लखनऊ के पास एक तांत्रिक रहते है जिसका नाम अवधूत बाबा हैं, वे बीती हुई कोई भी घटना ज्यों कि त्यों बता देते है चाहे वह घटना कितनी ही गोपनीय हो।

ये सारे उदाहरण भूतकाल की घटनाओं से संबंधित हैं और भारत में ऐसे सैंकड़ों साधु युवक, व युवतियां हैं जो कि अनजान व्यक्ति को देखकर उसके भूतकाल के बारे में सब कुछ बता देते हैं। यह अलग बात हैं कि वे इनके लिए हाथ देखने का, जन्मपत्री देखने का या ललाट की रेखाएं देखने का ढोंग करके आपको भूतकाल बताते हों, परन्तु सही बात यह है कि उन्हें कर्ण पिशाचिनी सिद्धि होती है जो कि अब गोपनीय नहीं रही, और काफी लोग इस प्रकार की साधना सीखकर इधर-उधर चमत्कार दिखाते हैं।

मेरे एक परिचित युवक हैं –बोधसिंह–जो यहीं से कर्ण पिशाचिनी साधना सीखकर तीन वर्ष पहले अमेरिका चले गए थे, पिछली बार जब मैंने उन्हें देखा तो वे लखपति थे, न्यूयार्क में उन्होंने अपना स्वयं का मकान खरीद लिया है,-२-३ उनकी कारें हैं, और अमेरिका में वे बोधसिंह पण्डित के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनकी विशेषता यह हैं कि वे फर्राटे के साथ लच्छेदार अंग्रेजी बोल लेते हैं और किसी भी अनजान अमेरिकन व्यक्ति से मिलते ही उसे उसके नाम से उच्चारित कर उसे आश्चर्यचकित कर देते हैं इसके बाद बोधसिंह पण्डित उसके पुत्र का नाम, पत्नी का नाम, कार्य, आजीविका तथा घर में क्या क्या सामान कहां-कहां रखा है, सही सही बता देते हैं। यह सुनते ही अमेरिकन व्यक्ति उनके पाण्डित्य और ज्ञान के सामने प्रभावित होकर झुक जाता है और उसे त्रिकालदर्शी मान लेता है, जबकि उसे मात्र कर्ण पिशाचिनी साधना ही ज्ञात है, पर इसके माध्यम से भूतकाल की छोटी से छोटी घटना साधक बता देता है, जब सामने वाला व्यक्ति प्रभावित हो जाता है फिर वह भविष्यकाल के बारे में गप्पें लगाने लग जाता है, सामने वाला व्यक्ति पूरी तरह से प्रभावित होता है अतः उसकी भविष्य वाणियों पर भी पूरा-पूरा विश्वास कर लेता है, जबकि भविष्यकाल में बताई हुई घटना कत्तई सही नहीं उतरती क्योंकि उसे ज्योतिष का नहीं के बराबर ज्ञान होता है।

वास्तव में कर्ण पिशाचिनी साधना कोई भी व्यक्ति सीख सकता है और जब वह यह साधना सिद्ध कर लेता है तो मन में ही प्रश्न करने पर कर्ण पिशाचिनी उसके कान में उसको सही-सही कह देती है जो कि उसे स्पष्ट सुनाई देता है, परन्तु साधक के पास जो व्यक्ति बैठे होते हैं उसे कुछ भी सुनाई या दिखाई नहीं देता।

उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति को देखते ही साधक मन ही मन प्रश्न करता है कि यह व्यक्ति कौन है और क्या नाम हैं? तो उसी क्षण उसके कान में स्पष्ट आवाज आयेगी कि इस व्यक्ति का नाम अमुक है और यह अमुक व्यापार करता है।

जीवन में जब इस प्रकार के तथाकथित साधु या त्रिकालदर्शी मिलें, जो कि भूतकाल सही-सही बता देते हों तो समझ जाना चाहिए कि उसे कर्ण पिशाचिनी साधना सिद्ध है पर भविष्य के बारे में बताई हुई उसकी बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

मैं आगे कर्ण पिशाचिनी साधना प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूँ जो कि प्रामाणिक है पर साधक को मेरी गंभीरता पूर्वक सलाह है कि वह किसी योग्य गुरु के निर्देश में ही यह साधना सम्पन्न करें, क्यों कि कई बार साधना अधूरी हो जाने पर आदमी या साधक पागल के समान भी हो जाता है।

प्रयोग एक

यह प्रयोग ११ दिन का है इसमें कांसी की थाली में सिन्दूर का त्रिशूल बनाकर उसका पूजन करे और दिन में शुद्ध गाय के घी का दीपक जला कर ग्यारह सौ मंत्रजप करे, पीछे रात में भी इसी प्रकार त्रिशूल का पूजन कर घी और तेल दोनों का दीपक जलाकर ग्यारह सौ बार मंत्र जप करे।

इस प्रकार ग्यारह दिन तक प्रयोग करने पर कर्ण पिशाचिनी सिद्ध हो जाती है और उसे कान में प्रश्न का उत्तर सही सही दे देती है, इस में साधक को एक समय भोजन करना चाहिये और यथासंभव काले वस्त्र धारण करने चाहिए। साधना काल में व्यर्थ बातचीत, स्त्री गमन, पर-स्त्री से बातचीत आदि सर्वथा वर्जित है।

मंत्र

ॐ नमः कर्ण पिशाचिनी अमोघ सत्यवादिनि मम कर्णे अवतरावतर अतीतानागतवर्तमानानि दर्शय दर्शय मम भविष्य कथय कथय ह्रीं कर्णपिशाचिनी स्वाहा॥

प्रयोग–दो

यह प्रयोग भी कर्ण पिशाचिनी से संबंधित है, आम की लकड़ी से बने पट्टे पर गुलाल बिछाकर अनार की कलम से रात को एक सौ आठ बार मंत्र लिख कर मिटाता जाय और लिखते समय मंत्र का उच्चारण भी करता जाय। अन्त वाले मंत्र का पंचोपचार पूजन करके इस मंत्र का ग्यारह सौ बार उच्चारण करें फिर उस मंत्र को अपने सिरहाने देकर सो जाय, इस प्रकार लगातार इक्कीस दिन करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है।

साधक को चाहिए कि यह मंत्र होली दीवाली या ग्रहण से प्रारम्भ करके इक्कीस दिन तक इसका प्रयोग करे। यह मंत्र खाट पर बैठकर भी लिख सकता है और अन्त में उस पट्टे को सिरहाने देकर उसी खाट पर सो सकता हैं।

इस बात का ध्यान रखें कि उस कमरे में उसके अलावा और कोई न सोए, और जहां पर बैठकर मंत्र लिखे बिना उठे वहीं पर उसे सो जाना चाहिए।

मंत्र

ॐ नमः कर्णपिशाचिनी मत्तकरिणी प्रवेषे ग्रतीतानागतवर्तमानानि सत्यं कथय मे स्वाहा ।

प्रयोग–तीन

इस प्रयोग में साधक को चाहिए कि वह काले ग्वारपाठे को ग्रभिमन्त्रित कर हाथ पांवों में लेप कर इस मन्त्र का नित्य पांच हजार जप करें, इस प्रकार इक्कीस दिन में यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, ग्रौर उसे कान में सारे तथ्य स्पष्ट सुनाई देने लग जाते हैं ।

मंत्र

ॐ ह्रीं नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चंडवेगिनि वद वद स्वाहा ।।

प्रयोग-चार

विधि तीसरे प्रयोग की तरह ही है, पर निम्नलिखित मंत्र का प्रयोग किया जा सकता है ।

मंत्र

ॐ ह्रीं सनामशक्ति भगवति कर्णपिशाचिनि चंडरोपिणि वद वद स्वाहा ।।

प्रयोग पाँच

साधक को चाहिये कि वह मिट्टी ग्रौर गाय के गोबर से पृथ्वी को लीप कर उस पर बहुत सा कुश बिछा दे ग्रौर भगवती कर्ण पिशाचिनी का पंचोपचार पूजन कर रुद्राक्ष की माला से नित्य दस हजार मंत्र जप करें ।

इस प्रकार ग्यारह दिन तक साधना करने पर कर्ण पिशाचिनी सिद्ध हो जाती है ।

मंत्र

ॐ हंसो हंसः नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चंडवेगिनि स्वाहा ।।

प्रयोग-छः

साधक लाल वस्त्र पहिन कर रात को घी का [illegible]क लगाकर नित्य दस हजार मन्त्र जप करे, इस प्रकार इक्कीस दिन तक निम्नलिखित मन्त्र का जप करने [illegible] सिद्धि प्राप्त हो जाती है ।

मंत्र

ॐ भगवति चडकर्णे पिशाचिनि स्वाहा ।।

प्रयोग–सात

यह प्रयोग ग्रत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है ग्रौ[illegible] कहते हैं कि व्यास जी ने स्वयं इस मन्त्र को सिद्ध क[illegible] ग्रभूतपूव सफलता प्राप्त की थी ।

सर्वप्रथम ग्राधी रात को ग्रपने हृदय में कर[illegible] पिशाचिनी देवी का ध्यान करके रक्त चंदन से मंत्र लिखन[illegible] चाहिये ग्रौर उस पर रक्त चंदन, बन्धूक-पुष्प ग्रादि [illegible] पूजा करनी चाहिये तथा 'ॐ ग्रमृतं कुरु कुरु स्वाहा' इ[illegible] मंत्र से यंत्र को ग्रौर लिखे हुए मंत्र को प्रोक्षण करन[illegible] चाहिये, तथा बाद में मछली की बली देनी चाहिये [illegible] बली निम्न मंत्र से दी जानी चाहिये "ॐ कर्णं पिशाचि[illegible] दग्धमीनबलिं गृहण गृहण मम सिद्धि कुरू कुरु स्वाहा ।।"

इसके बाद रात्रि को पांच हजार मंत्र जप करन[illegible] चाहिये तथा प्रातः काल तर्पण करना चाहिये तर्पण निम[illegible] मंत्र से किया जाता है "ॐ कर्ण पिशाचि तर्पयामि स्वाह[illegible]"

इस प्रकार एक लाख जप करना चाहिये ग्रौर उसक[illegible] दशांश होम करने के बाद फिर दशांश तर्पण कर[illegible] चाहिये ।

ऐसा करने पर निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है ग्रौ[illegible] कठिन से कठिन समस्या ग्रौर गोपनीय भूतकाल भी उ[illegible] स्पष्ट दिखाई देता है ।

वस्तुतः ये साधनाएं ग्रासान दिखाई देती हैं परन[illegible] थोड़ी सी भी त्रुटि साधक के लिये नुकसान दायक ह[illegible] सकती हैं, परन्तु इसमें कोई दो राय नहीं कि ऊपर ज[illegible] बारह प्रयोग बताए हैं वे प्रामाणिक हैं । साधकों ने मे[illegible] सामने सिद्ध किये हैं ग्रौर उन्हें तत्क्षण सफलता मिली [illegible] ग्रतः इनके बारे में संदेह करना व्यर्थ है ।

परन्तु फिर भी प्रारम्भ में साधकों को यह सलाह [illegible] जाती है कि उन्हें वे किसी गुरु के समीप बैठ कर उनक[illegible] सन्निध्य में ही साधना सम्पन्न करनी चाहिये ।

यद्यपि ये साधनाएं गोपनीय रही हैं परन्तु इस पत्रिक[illegible] के माध्यम से पहली बार स्पष्ट की गई है, जो कि प्रामाणि[illegible] है ।

※